वर्ष - 32 अंक - 49 | नई दिल्ली, 06 - 12 दिसम्बर, 2020 | कुल पृष्ठ - 8, वार्षिक शुल्क 200/- (डाक द्वारा)

NNS Media Group Since 1950 प्रकाशन

बदलते भारत की सभ्य तस्वीर

सप्ताहांत

मेरी दिल्ली

Mob. : 08447732401 www.meridelhi.com www.nnsmediagroup.com

संस्थापक : स्वर्गीय नेकीराम गुप्ता । प्रेरणास्त्रोत : स्व. केसर सिंह गुप्ता । संपादक : राजेश गुप्ता । संवाददाता : अक्षय गुप्ता । कार्यालय : मेरी दिल्ली हाउस, 25/10, ईस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26 । मूल्य ` 3:00/- /MeriDelhiNews ई-मेल:nnsonline@nnsonline.com

काले कानून वापिस ले केंद्र सरकार : शिव चरण गोयल

सिंधु बॉर्डर। किसानो के अंदोलन मे विधायक शिव चरण गोयल ने आंदोलनकारियो के समर्थन और सहयोग के लिऐ सिंघु बोर्डर पर शांतिपूर्ण ढंग से धरना प्रर्दशन किया ।

इस अवसर पर विधायक शिव चरण गोयल ने कहा कि मोतीनगर विधानसभा के कर्मठ साथियों के साथ किसानों के आंदोलन में सेवादार बनकर किसानों की सेवा की एवं किसानों के हक की लड़ाई में सरकार कन्धे से कंधा मिलाकर किसानों के साथ खड़ी है। केंद्र सरकार किसानों पर जुल्म ढा रही है और उनकी परेशानियों को अनदेखा कर रही है। सरकार का नए कृषि कानून किसान विरोधी है यदि कृषि कानून शीघ्र वापस ना लिया गया तो किसान आत्महत्या करने को मजबूर हो जाएंगे। नए कानूनों से किसान को नुकसान होने की पूरी संभावना है इसलिए केंद्र सरकार को तुरंत उनकी मांगे मानकर तीनों काले कानून वापस लेने चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि आम आदमी पार्टी कि किसान के हित में लड़ाई तब तक जारी रहेगी जब तक किसानों को उनकी मेहनत का सही दाम नहीं मिल जाता, फसलों के विपणन की सही व्यवस्था सुनिश्चित नहीं हो जाती और ये किसान विरोधी एक्ट पूरी तरह से वापस नहीं लिया जाता।

डॉ. अजय शर्मा एवं उनके परिवार की ओर से मूर्ति स्थापना का आयोजन

बुलंदशहर। सर्व ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय मुख्य सलाहकार व लामा राइस प्राइवेट लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. अजय शर्मा एवं उनके परिवार की ओर से बुलंदशहर के बाहँपुर स्थित विख्यात मंदिर में श्री हनुमान जी व श्री खाटू श्याम जी की मूर्ति स्थापना समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान अनेक ब्राह्मणों द्वारा पूरे विधि विधान के साथ मंदिर में मूर्ति स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा की गई। मूर्ति स्थापना समारोह में अनेकों सम्मानित गणमान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के पश्चात विशाल भंडारे प्रसाद का वितरण किया गया।

पंजाबी बाग वार्ड की सभी कालोनियों को 44 वीं बार करवाया गया सेनीटाईज

पंजाबी बाग । निगम पार्षद कैलाश सांकला द्वारा पंजाबी बाग वार्ड की सभी कालोनियों को 100 प्रतिशत सेनीटाईज करवाया गया। 44 वी बार सैनिटाइजेशन का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। वैश्विक महामारी कोविड-19 कोरोना संक्रमण से बचने के लिए पंजाबी बाग क्षेत्र की सभी कालोनियों को हाई प्रेशर सुपर पावर जेटिंग मशीन, ड्रोन पंप मशीन, गणेश पंप एवं ट्रैक्टर गाड़ी से 100 प्रतिशत सैनिटाइज करवाकर जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। डेंगू मलेरिया जैसी बीमारियों से बचने के लिए मच्छरों की उत्पत्ति की रोकथाम हेतु सेवा बस्ती महात्मा गांधी रोड नंबर - 33 रघुवीर नगर पुलिया में मच्छरों की उत्पत्ति ना हो इसके लिए निगम के स्वास्थ्य विभाग द्वारा दवाइयों का छिड़काव लगातार किया जा रहा है पंजाबी बाग वार्ड क्षेत्र में श्री सांकला के प्रयासों से निगम के उद्यान विभाग सीएफडब्ल्यू एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा क्षेत्र के सभी कालोनियों में पश्चिमी पंजाबी बाग, शिवाजी पार्क, अरिहंत नगर, स्वयंसिद्धा कॉलोनी, एमआइजी फ्लैट, लाल क्वाटर फ्लैट, एसएफएस फ्लैटस, ए ब्लॉक जेजे कॉलोनी, एवं सरकारी संस्थानों एसीपी ऑफिस, थाना पंजाबी बाग, पुलिस चौकी मादीपुर, विद्यालयों में तथा उन तमाम स्थानों पर जहां पब्लिक का आना जाना लगा रहता है जैसे सब्जी मंडी, मदर डेयरी, दवाई की दुकाने, राशन की दुकानों को 100 प्रतिशत सोडियम हाइपोक्लोराइट से सेनीटाइज करवाया जा रहा है और आगे भी कार्य निरंतर सुचारू रूप से चलता रहेगा ।

वैश्य वर्ल्ड फाउंडेशन दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष मिथिलेश कुमार अग्रवाल के निधन पर जताया शोक

नई दिल्ली। वैश्य वर्ल्ड फाउंडेशन दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ समाजसेवी मिथिलेश कुमार अग्रवाल जी का 23 नवंबर को निधन हो गया। उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हुए वैश्य वर्ल्ड फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष यशपाल गुप्ता, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष रश्मि गुप्ता, राष्ट्रीय सचिव घनश्याम दास गुप्ता एवं अन्य पदाधिकारियों ने कहा कि उनका निधन समाज के लिए अपूर्णनीय क्षति है। वे अत्यंत ही मृदुभाषी व मिलनसार व्यक्तित्व के स्वामी थे। वे वैश्य वर्ल्ड फाउंडेशन के एक स्थाई एवं मजबूत स्तंभ थे। वैश्य वर्ल्ड फाउंडेशन की दिल्ली प्रदेश के संस्थापक के रूप में तथा इस संस्था को अविरल गति से चलाते हुए संस्था को उच्चतम स्थान पर पहुंचाने में उनकी भूमिका अविस्मरणीय रहेगी।

स्व. मिथिलेश कुमार अग्रवाल जी एक सफल व्यवसायी, चार्टर्ड अकाउंटेंट, समाजसेवी एवं वैश्य समाज के गौरव थे। उन्होंने जीवन में अनेक संघर्षों, कठिनाइयों के साथ परिवार, व्यापार को संभाला। बहुमुखी प्रतिभा के धनी स्व. मिथिलेश कुमार अग्रवाल जी ने अपना पूरा समय समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया। अपनी निपुण कार्यशैली के कारण आपकी गिनती प्रबुद्ध चार्टर्ड अकाउंटेंटों में होती थी। वैश्य वर्ल्ड फाउंडेशन के सदस्य ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिल्ली प्रदेश में वैश्य वर्ल्ड फाउंडेशन के उद्देश्यों को कार्यान्वित करने में उनके द्वारा शुरू किए गए कार्यों को पूरा करने की शक्ति सभी सदस्य जुटा सके। वैश्य वर्ल्ड फाउंडेशन परिवार स्व. मिथिलेश कुमार अग्रवाल जी को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दे तथा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार को इस असीम दुख को सहने की शक्ति प्रदान करें।

सिख समाज की शख्सियत डॉ. लाम्बा को जन्मदिन की हार्दिक बधाई

सहनशीलता, कर्मशीलता एवं दूरदर्शिता से ही मिलती है जीवन में सफलता-डॉ. एचबीएस लाम्बा

पेंट्स उद्योग में मार्केट लीडर बन चुके, हिंदुस्तान के करोड़ों दिलों पर राज करने वाले न्यू वैम्बले प्रोडक्ट्स के मैनेजिंग डायरेक्टर, पंजाबी बाग निवासी एवं पेंट इंडस्ट्री में भीष्म पितामह के नाम से विख्यात डॉ. एचबीएस लाम्बा ने गत 3 दिसंबर वीरवार को अपने जीवन के 80 वर्ष पूर्ण करके 81बें वर्ष में प्रवेश किया है। मेरी दिल्ली समाचार पत्र परिवार की ओर से डॉ. एचबीएस लाम्बा को सुखी समृद्ध एवं वैभवशाली जन्मदिन की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

डॉ. एचबीएस लाम्बा जिन्होंने अपने जीवन को कर्म प्रधान बनाया हुआ है और अपनी कर्मशीलता के बल पर ही पेंट उद्योग की दुनिया में न्यू वैम्बले प्रोडक्ट्स के उत्पादों को श्रेष्ठतम स्थान दिलाया है। डॉ. लाम्बा का मानना है कि एक सफल व्यक्ति बनने के लिए जीवन में सहनशीलता कर्मशीलता एवं दूरदर्शिता होना बहुत जरूरी है। डॉ. लाम्बा के अनुसार जीवन के 80 वर्षों में मेरा यही अनुभव रहा है कि सफलता पाने के लिए जीवन में सहने का अभ्यास होना जरूरी है। व्यक्ति को अपने जीवन में जिन कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है यह एक सर्वभोग नियम है इसमें कोई दोराय नहीं है। समय और परिस्थितियों के अनुसार प्रत्येक मनुष्य के जीवन में समस्याएं आती हैं लेकिन जो लोग सहनशीलता का कवच धारण कर लेते हैं उनके लिए समस्या भी समाधान बन जाती है, जो धीरज से आगे बढ़ते हैं वही लोग बातों का निवारण खोजने में सफल हो जाते हैं, जिस प्रकार गांधी जी ने विनम्रता एवं सहनशीलता का परिचय देते हुए अंततः अंग्रेजों को इस देश से खदेड़ कर ही दम लिया इसी प्रकार सहनशील व्यक्ति भी अपनी लाइफ में आने वाली प्रत्येक मुसीबतों का सहनशीलता पूर्वक मुकाबला करते हुए उन पर विजय प्राप्त कर ही लेता है । आज डॉ. लाम्बा ने जीवन में न्यू वैम्बले प्रोडक्ट्स के कारोबार को जिस मुकाम पर पहुंचाया है उसका श्रेय उनके व्यक्तित्व एवं कार्यकुशलता को जाता है।

थिनर एवं पेंट्स के क्षेत्र में डॉ. एचबीएस लाम्बा ने अपनी कंपनी न्यू वैम्बले प्रोडक्टस को नित नई ऊंचाइयों दी हैं। डॉक्टर लाम्बा जी के अनुसार कारपोरेट जगत के उद्यमी को जीवन में सफल होने के लिए श्रीमद्भागवत गीता से प्रेरणा लेनी चाहिए जिसमें लिखा है कि एक अच्छे लीडर को दूरदर्शी होना चाहिए, दूरदर्शिता ही सफलता का मूल कारण है और सफलता प्राप्त करने पर कभी भी अहंकारी भी नहीं होना चाहिए। क्योंकि जिस व्यक्ति में अहंकार आ जाता है उसका पतन शुरू हो जाता है। दूरदर्शिता सहनशीलता एवं कर्मशीलता के बल पर कार्यों का सिस्टम सुधरता है और वही तरक्की की सीढ़ी पर चढ़ा देता है। कर्मशील व्यक्ति का परिश्रम कभी भी व्यर्थ नहीं जाता वह एक दिन अवश्य सफल होता है। न्यू वैम्बले प्रोडक्ट्स के अंतर्गत बनने वाले थिनर एवं पेंट्स आज समस्त भारतवर्ष में एक अत्यधिक लोकप्रिय हैं, उनको इस मुकाम पर पहुंचाने के लिए डॉ. लाम्बा ने अनुभव एवं शिक्षा अपने पिता स्व. श्री मक्खन सिंह लांबा जी से पाई है जिन्होंने अपने उच्च विचारों और सहनशीलता के बल पर पूरे परिवार को एक साथ रखा और हमेशा दूरदर्शिता से काम किया।

गौरतलब है कि अपने स्थापना वर्ष से लेकर अब तक न्यू वैम्बले प्रोडक्ट्स ने विकास की नई मंजिलें तय की है, कंपनी के प्रबंध निदेशक डॉ. लाम्बा को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिलने वाले ढेरों पुरस्कार आज इस कंपनी के विकास की कहानी को बयां करते हैं। अपने जीवन के सफलतम 80 वर्षों का सफरनामा पार कर के 81बें बसंत में प्रवेश करने वाले डॉ. एचबीएस लाम्बा को 'मेरी दिल्ली' समाचार पत्र परिवार पुनः जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई देता है और वाहेगुरु से कामना करता है कि आप यूं ही समाज की सेवा करते रहें और आपकी समाज सेवा का लाभ अधिक से अधिक सामाजिक धार्मिक एवं चैरिटेबल संस्थाओं को मिलता रहे तथा आपकी समाज सेवा का आलोक यूं ही जगमगाता रहे।

किसानों के हित का फैसला किसानों पर छोड़े सरकार

राजेश गुप्ता

अपने प्रधानमंत्री कार्यकाल के दौरान नरेंद्र मोदी सरकार पहली बार किसानों की एकता एवं संघर्ष क्षमता के सामने झुकती नजर आ रही है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सरकार द्वारा कहा जा रहा है कि उसके द्वारा जो तीन कानून बनाए गए हैं वह किसानों के हित में हैं एवं उनसे छोटे-छोटे किसानों का भला होने वाला है। इसके विपरीत सरकार जिन किसानों की भलाई होने की बात कर रही है वही किसान इन कानूनों को अपने लिए काला कानून बताते हुए अपने गांव एवं खेत से दूर सड़कों को घेरकर बैठे हुए हैं एवं पीछे हटने को तैयार नहीं है। भारतीय किसान संघ ने तो प्रधानमंत्री का पुतला जलाने की घोषणा के साथ ही साथ 8 दिसंबर को भारत बंद करने का भी ऐलान कर दिया है। इसका मतलब है कि 5 दिसंबर की बातचीत में किसान सरकार की बात को मानने वाले नहीं हैं। किसानों के रवैये से स्पष्ट है कि वह बातचीत में शामिल जरूर हो रहे हैं लेकिन जब तक सरकार नियमों-कानूनों को पूरी तरह वापस लेने के लिए तैयार नहीं हो जाती तब तक वे सड़कों से हटने के लिए तैयार नहीं होंगे। इन किसानों द्वारा तब से केंद्र सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों का विरोध किया जा रहा है जब से इनको संसद द्वारा पारित किया गया है, लेकिन सरकार उनकी आवाज को अनसुना करने का प्रयास कर रही थी। यही कारण है कि सरकार को अपनी आवाज सुनाने के लिए दिल्ली को देश के विभिन्न भागों को जोड़ने वाले सभी रास्तों को जाम करने का रास्ता अख्तियार करना पड़ा। जब तक किसान पंजाब में रेल रोको आंदोलन चला रहे थे तब तक केंद्र सरकार ने उनकी बात नहीं सुनी एवं मीडिया द्वारा भी उनको तवज्जो नहीं दी गई। जब किसानों ने देश की राजधानी को घेरने का अभियान प्रारंभ किया तो सरकार को भी उनकी आवाज सुननी पड़ी एवं मीडिया के लिए भी उनकी अनदेखी करना कठिन हो गया। आज सरकार के पास इन कानूनों को लेकर अपने कदम पीछे खीचने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है एवं इस काम में उसके द्वारा जितनी देरी की जाएगी उसकी फजीहत उतनी ही ज्यादा बढ़ने वाली है। एक लोकतांत्रिक सरकार के लिए जन भावना का सम्मान करते हुए अपने कदम पीछे हटाने का निर्णय करना किसी प्रकार की शर्मिंदगी की बात नहीं है। हो सकता है कि इन कानूनों के लागू होने से किसानों का भला होने वाला हो लेकिन जब किसान को इसमें अपना नुकसान समझ में आ रहा है तो सरकार जबरदस्ती किसानों का भला क्यों करना चाहती है।

मोदी जी को इस बात पर विचार करना चाहिए कि इन कानूनों का विरोध करते करते कांग्रेसी एवं अकाली दल किस प्रकार एक साथ हो गए। वरिष्ठ नेता प्रकाश सिंह बादल को अपना पद्म विभूषण जैसा प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान वापस करने की घोषणा आखिरकार क्यों करनी पड़ी। परगट सिंह, हरभजन सिंह जैसे खिलाड़ी एवं दुनियाभर में पंजाब की पृष्ठभूमि रखने वाली तमाम चर्चित हस्तियां आखिरकार क्यों किसानों के आंदोलन का समर्थन कर रही हैं एवं सरकार से इन कानूनों को वापस लेने की मांग करने लगी है। अकाली दल को भाजपा के साथ अपना वर्षों पुराना संबंध तोड़ने की घोषणा क्यों करनी पड़ी। इसलिए यदि इन कानूनों को लेकर किसानों के मन में यह आशंका घर कर गई है कि सरकार अब खेती को भी कारपोरेट सेक्टर के हवाले करके किसान को अपने ही खेत में मजदूरी करने के लिए मजबूर करना चाहती है तो सरकार को अपनी मंशा साफ करने का प्रयास करना चाहिए एवं किसानों को यह समझने के लिए समय देना चाहिए कि वह कारपोरेट के साथ नहीं बल्कि किसानों के साथ खड़ी है। इतना तो तय है कि सरकार किसानों को सड़क से हटाने के लिए बल प्रयोग नहीं कर सकती है एवं ऐसा करने की भूल करेगी तो इसे अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारने के अलावा और कुछ नहीं कहा जाएगा। बेहतर होगा कि सरकार द्वारा यदि शनिवार की वार्ता में किसानों के साथ बातचीत में कोई तत्काल समाधान नहीं निकल पाता है तो उसके द्वारा अपनी ओर से एकतरफा इन कानूनों को कुछ समय के लिए स्थगित करने की घोषणा की जाए एवं किसानों के साथ विचार-विमर्श के बाद एक ऐसा कानून बनाने का प्रयास किया जाए तो बेहतर होगा। किसानों द्वारा अपने लिए कुछ मांगने का प्रयास नहीं किया जा रहा है बल्कि अपने अस्तित्व पर विद्यमान खतरे को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है एवं सरकार को उनकी मांग को मान लेने में किसी प्रकार के अपमान की बात नहीं है। सरकार किसानों के लिए तमाम योजनाएं चलाने की बजाय केवल इतना कर दे कि वह किसान को उसकी फसल की न्यूनतम कीमत देने की गारंटी प्रदान करेंगी वहीं किसानों के लिए उसकी सबसे बड़ी सौगात होगी। E-mail : rgupta@nnsonline.com

131वीं जयंती पर खुदीराम बोस को किया नमन महाशय धर्मपाल जी को दी भावभीनी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद ने देश की आजादी के महान क्रांतिकारी खुदीराम बोस की 131वीं जयन्ती पर गूगल मीट पर याद किया व मसालों के बादशाह, एमडीएच के मालिक महाशय धर्मपाल जी के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि 19 वर्ष की आयु में फाँसी के फंदे पर झूलने वाले खुदीराम बोस सबसे कम आयु के क्रांतिकारी थे। उन्होंने बंग भंग के आंदोलन में भी भाग लिया। आज युवाओं को ऐसे देश भक्तों से प्रेरणा लेकर आजादी की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए। साथ ही अनिल आर्य ने महाशय धर्मपाल जी को भी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि पाकिस्तान से दिल्ली आकर बारा टूटी चौक से सदर बाजार तांगा चलाने वाला व्यक्ति एक मसालों का बादशाह बना। वह आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के भी कई वर्षों से प्रधान रहे थे व अनेको आर्य संस्थाओं, गुरुकुलों की अपार आर्थिक सहायता भी करते थे। 96 वर्षीय महाशय जी के चले जाने से एक युग का अंत हो गया है।

एमिटी शिक्षण संस्थान के निदेशक आनन्द चौहान, आंनद प्रकाश आर्य (हापुड), उत्तर प्रदेश प्रान्तीय महामंत्री प्रवीन आर्य, आचार्य महेन्द्र भाई, धर्मपाल आर्य, सौरभ गुप्ता, नरेंद्र आहूजा विवेक, उर्मिला आर्या, दीप्ति सपरा, ओम सपरा, यशोवीर आर्य, आस्था आर्या, दुर्गेश आर्य, देवेन्द्र भगत आदि ने भी आर्य नेता महाशय धर्मपाल जी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कर्मयोगी की संज्ञा दी।

हनुमानजी ने भीम को दिए थे अपने 3 बाल, जानें इस रहस्य को

महाभारत और रामायण में कई रहस्य छुपे हुए हैं। ऐसा ही एक रहस्य है महाभारत में। यह उस समय की बात है, जब युद्ध में पांडवों ने कौरवों पर विजयश्री प्राप्त कर ली थी और पांडव हस्तिनापुर में सुखपूर्वक जीवन गुजार रहे थे। युधिष्ठिर के राज में प्रजा को किसी भी चीज की कोई कमी नहीं थी। किंवदंतियों की मान्यता अनुसार एक दिन देवऋषि नारद मुनि महाराज युधिष्ठिर के समक्ष प्रकट हुए और कहने लगे कि आप सभी पांडव यहां प्रसन्नतापूर्वक रह रहे हैं, लेकिन वहां स्वर्गलोक में आपके पिता बहुत दुखी हैं। देवऋषि के ऐसे वचन सुनकर युधिष्ठिर ने इसका कारण पूछा, तो देवऋषि ने कहा, वे अपने जिंदा रहते हुए राजसूय यज्ञ करवाना चाहते थे लेकिन ऐसा वे कर नहीं सके इसलिए दुखी हैं। महाराज युधिष्ठिर आपको आपके पिता की आत्मा की शांति के लिए यह यज्ञ करवाना चाहिए।

नारदजी के ऐसे वचन सुनकर युधिष्ठिर ने अपने पिता की आत्मा शांति के लिए राजसूय यज्ञ करने की घोषणा की। इसके लिए उन्होंने नारदजी के परामर्श पर भगवान शिव के परम भक्त ऋषि पुरुष मृगा को आमंत्रित करने का फैसला लिया। ऋषि पुरुष मृगा जन्म से आधे पुरुष शरीर के तथा नीचे से उनका पैर मृग का था, लेकिन वे कहां रहते थे यह किसी को पता नहीं था। किंवदंति अनुसार ऐसे में युधिष्ठिर ने उन्हें ढूंढकर यज्ञ में आमंत्रित करने के लिए भीम को इसकी जिम्मेदारी सौंपी। भीम अपने बड़े भ्राता की आज्ञा का पालन करते हुए ऋषि पुरुष मृगा को खोजने निकल पड़े। खोजते-खोजते वे घने जंगलों में पहुंच गए। जंगल में चलते वक्त भीम को मार्ग में हनुमानजी दिखाई दिए जिन्होंने भीम के घमंड को चूर किया। यह कथा तो आपको मालूम ही है। भीम भी पवनपुत्र हैं, इस नाते भीम हनुमानजी के भाई हुए। भीम ने लेटे हुए हनुमानजी को बंदर समझकर उनसे अपनी पूंछ हटाने के लिए कहा। तब बंदर ने चुनौती देते हुए कहा कि अगर वह उसकी पूंछ हटा सकता है तो हटा दे, लेकिन भीम उनकी पूंछ हिला भी नहीं पाए। तब जाकर उन्हें एहसास हुआ कि यह कोई साधारण बंदर नहीं है। यह बंदर और कोई नहीं, बल्कि हनुमानजी थे। भीम ने यह जानकर हनुमानजी से क्षमा मांगी।

क्षमा मांगने के बाद क्या हुआ ?

भीम ने हनुमानजी को अपने जंगल में भटकने का उद्देश ?य बताया। कुछ विचार करने के बाद हनुमानजी ने भीम को अपने शरीर के 3 बाल दिए और कहा कि इन्हें अपने पास रखो संकट के समय में ये तुम्हारे काम आएंगे।

भीम ने हनुमानजी के वे 3 बाल अपने पास सुरक्षित रख लिए और चल पड़े ऋषि मृगा को ढूंढने। कुछ दूर जाने के बाद ही भीम को भगवान शिव के परम भक्त पुरुष मृगा मिल गए, जो महादेव शिव की स्तुति कर रहे थे। भीम ने उनके पास जाकर उन्हें प्रणाम किया तथा अपने आने का प्रयोजन बताया। इस पर ऋषि पुरुष मृगा भी उनके साथ चलने को राजी हो गए, लेकिन उन्होंने एक शर्त रख दी।

वह कौन सी शर्त थी?

पुरुष मृगा ने यह शर्त रखी कि तुम्हें मुझसे पहले हस्तिनापुर पहुंचना होगा, नहीं तो मैं तुम्हें खा जाऊंगा। भीम ने थोड़ी देर विचार करने के बाद ऋषि पुरुष मृगा की शर्त स्वीकार कर ली। शर्त स्वीकार करने के बाद वे अपनी पूरी शक्ति के साथ हस्तिनापुर की ओर दौड़ने लगे। बहुत दूर तक भागते-भागते भीम ने जब पीछे की ओर यह जानने के लिए देखा कि ऋषि पुरुष मृगा कितने पीछे रह गए हैं तो उन्होंने पाया कि ऋषि तो बस उन्हें पकड़ने ही वाले हैं। यह देख भीम चौंक गए और घबराकर अपनी पूरी शक्ति के साथ शीघ्रता से भागने लगे। लेकिन हर बार पीछे देखने पर उन्हें ऋषि मृगा उनके बिलकुल पास नजर आते थे।

तब भीम ने क्या किया?

भागते-भागते तभी भीम को हनुमानजी के दिए उन 3 बालों की याद आ गई। हनुमानजी ने कहा था कि संकट काल में ये तुम्हारे काम आएंगे। भीम ने उनमें से एक बाल दौड़ते-दौड़ते जमीन पर फेंक दिया। वह बाल जमीन में गिरते ही लाखों शिवलिंगों में परिवर्तित हो गया। भगवान शिव के परम भक्त होने के कारण ऋषि पुरुष मृगा मार्ग में आए प्रत्येक शिवलिंग को प्रणाम करते हुए आगे बढ़ने लगे। इसके चलते भीम को दूर तक भागने का मौका मिल गया। कुंती पुत्र भीम लगातार भागते रहे। फिर जब भीम को लगा कि ऋषि अब फिर से उन्हें पकड़ ही लेंगे तो उन्होंने फिर से एक बाल गिरा दिया और वह बाल भी बहुत से शिवलिंगों में परिवर्तित हो गया। इस प्रकार से भीम ने ऐसा 3 बार किया। अंत में जब भीम हस्तिनापुर के द्वार में घुसने ही वाले थे कि ऋषि पुरुष मृगा उन्हें पकड़ने के लिए दौड़े और उन्हें पकड़ ही लिया था कि तभी भीम ने छलांग लगाई और उनका बस पैर ही द्वार के बाहर रह गया था।

इस पर पुरुष मृगा ने उन्हें खाना चाहा, लेकिन उसी दौरान भगवान कृष्ण और युधिष्ठिर द्वार पर पहुंच गए। दोनों को देखकर युधिष ?ठिर ने भी पुरुष मृगा से बहस करनी शुरू कर दी। तब युधिष्ठिर से पुरुष मृगा ने कहा कि शर्त अनुसार इसका पैर द्वार के बाहर ही था अत: यह पहुंच नहीं पाया। ऐसे में मैं इसे खाऊंगा। फिर भी हे धर्मराज! तुम न्याय करने के लिए स्वतंत्र हो। ऐसे वचन सुनकर युधिष्ठिर ने ऋषि पुरुष मृगा से कहा कि भीम के केवल पैर ही द्वार के बाहर रह गए थे, बाकी संपूर्ण शरीर तो द्वार के अंदर ही है अत: आप भीम के केवल पैर ही खा सकते हैं। ऐसा सुनकर युधिष्ठिर के न्याय से ऋषि पुरुष मृगा प्रसन्न हुए तथा उन्होंने भीम को जीवनदान दे दिया। इसके बाद ऋषि ने यज्ञ संपन्न करवाया और सबको आशीर्वाद भी दिया।

ॐसाई हेल्प फाउंडेशन जरूरतमंद लोगो की मदद के लिए सदैव तत्पर

रोहिणी। ॐ साई हेल्प फाउंडेशन के अध्यक्ष दीपक झा ने मेरी दिल्ली संवाददाता से बातचीत के दौरान बताया कि इस फाउंडेशन कि शुरुआत आज से लगभग दो साल पहले हुई थी और तभी से यह संस्था जरूरतमंद लोगो कि सेवा करने में तत्पर है इस संस्था कि शुरुआत 4 लोगो से हुई थी और जब लोगो ने देखा कि यह समाज कल्याण हेतू एक से बढ़कर एक बेहतरीन कार्य कर रही है तब हमारे साथ गणमान्य व्यक्ति भी जुड़ते चले गए और उम्मीद है आगे भी जुड़ते रहेंगे। उन्होंने बताया कि संस्था द्वारा जरूरतमंद लोगो तक हरसंभव मदद पहुंचाने का प्रयास किया जाता है। वैश्विक महामारी कि वजह से लोगो कि नौकरिया छूट गई है जिसके चलते उनके घर पे खाने पिने की समस्या भी हो गई ऐसे में हमारी संस्था द्वारा ज्यादा तो नहीं पर हमे जहा-जहा पता चला कि लोग भूख से तड़प रहे है वहा- वहा हमने उनतक राशन पहुंचाने का प्रत्येक प्रयास किए और आगे भी ऐसे करते रहेंगे। इतना ही नहीं फाउंडेशन द्वारा जरूरतमंद स्कूल के बच्चो को उनकी पढ़ाई से सम्बंधित वस्तुए दी जाती है, समय-समय पर स्वास्थय जाँच शिविर लगाने के साथ इत्यादि कार्य बढ़चढ़ कर किये जाते है।

पाम एज द्वारा वरिष्ठ नागरिकों की सेवा के लिए सहायता शिविर का आयोजन

अशोक विहार। वरिष्ठ नागरिकों की सेवा के लिए प्रतिबद्ध पाम एज द्वारा हर महीने के दूसरे शुक्रवार को किए जाने वाले समाज सेवा कार्यों की कड़ी में इस बार शुक्रवार 11 दिसंबर को सुबह 11 बजे श्री सनातन धर्म मंदिर, ब्लॉक सी-3, अशोक विहार, फेज-2 में आर्थिक रूप से कमजोर वरिष्ठ नागरिकों को सहायता प्रदान की जाएगी। इस दौरान पाम एज द्वारा

कच्चे खाद्य सामग्री में 10 किलो आटा, 5 किलो चावल, 1 किलो चना दाल, 1 किलो चीनी, 200 ग्राम चाय की पत्ती, पारले बिस्कुट, मास्क, सैनिटाइजर, नाश्ता एवं 50 रुपए नगद दिए जाएंगे। इस दौरान पुराने गर्म कपड़ों का लंगर भी होगा। कोरोना काल को देखते हुए सुरक्षा नियमों का पूरी तरह पालन किया जाएगा। मास्क, सैनिटाइजर और 2 गज की दूरी सभी को रखना जरूरी है। सहायता प्राप्त करने के लिए रजिस्ट्रेशन केवल अशोक विहार क्षेत्र के वरिष्ठ नागरिक आधार कार्ड की कॉपी, फोटो एवं मोबाइल नंबर के साथ मंदिर में सायं 6 बजे से 7.30 तक करवा सकते हैं।

मेरी दिल्ली सप्ताहांत
मेरी दिल्ली हाउस, 25/10
ईस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26
आर.एन.आई. नं. : 49326/89
रजि. नं. : DL(W)05/2065/18-2020
लाइसेंस नं. : U(W)-8/2018-2020
संस्थापक : स्व. नेकी राम गुप्ता
प्रेरणास्त्रोत : स्व. केसर सिंह गुप्ता
संपादक : राजेश गुप्ता
वार्षिक शुल्क
साधारण डाक से : 200 रु.
विज्ञापन व प्रशासन
मो.-8447732401, 9899632000
इंटरनेट सर्विस: www.nnsmediagroup.com
ई-मेल : nnsonline@.nnsonline.com
स्वत्वाधिकारी एन.एन.एस. ऑनलाइन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक राजेश गुप्ता द्वारा 25/10, ईस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली-110026 से प्रकाशित तथा विभा पब्लिकेशन प्रा.लि., डी-160 बी, सेक्टर-7, नोएडा से मुद्रित
लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित।
नोट : 'मेरी दिल्ली' में प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली न्यायालय में ही किया जाएगा।
आवश्यक सलाह : विज्ञापन में किए गए दावों के संबंध में किसी निर्णय से पहले पाठक सभी तथ्यों की समुचित जांच स्वयं कर ले। किसी भी प्रकार के लेन-देन / दावे के लिए समाचारपत्र जिम्मेवार नहीं है।
सूचना- वस्तु उपयोग व स्वास्थ्य संबंधी जानकारी की प्रामाणिकता के लिए अपने स्वास्थ्य सलाहकार या डॉक्टर की सलाह पर ही अमल करें। 'मेरी दिल्ली' प्रबंधन इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

मेरी दिल्ली हिन्दी दैनिक
की खबरें अपने मोबाईल पर पाने के लिए Like करें फेसबुक पर
www.facebook.com/meridelhinews

4वें हिंदी सिनेमा सम्मान समारोह का ऑनलाइन संचालन दिलीप कुमार साहब को हिंदी सिनेमा महानायक सम्मान

नोएडा। 4वें हिंदी सिनेमा सम्मान समारोह को इस वर्ष ऑनलाइन सफलतापूर्वक संचालित किया गया। यह समारोह प्रतिवर्ष विज्ञान भवन में होता था। हिंदी सिनेमा सम्मान समारोह के चौथे संस्करण में हिंदी सिनेमा महानायक के शीर्षक से दिलीप कुमार साहब का सम्मान किया गया।

हिंदी सिनेमा सम्मान समिति, सिनेमा सम्मान समारोह के संरक्षक शत्रुघ्न सिन्हा, इम्पा के अध्यक्ष टीपी अग्रवाल, प्रख्यात निदेशक और राष्ट्रीय पुरस्कार जूरी के पूर्व अध्यक्ष राहुल रवैल, श्याम श्रॉफ प्रख्यात वितरक, कोमल नाहटा प्रख्यात पत्रकार और टेलीकास्टर, बीएन तिवारी और आईसीएमईआई के अध्यक्ष संदीप मारवाह ने दिलीप कुमार साहब का आभार व्यक्त किया।

इस सम्मान को सायरा बानो ने दिलीप कुमार साहब की ओर से स्वीकार किया। हिंदी सिनेमा भूषन- सम्मान बप्पी लहरी, जावेद जाफरी, बाबा आज़मी, अशीम सामंत, मनमोहन सिंह, बिजोन दासगुप्ता, जोया अख्तर, रसिका दुग्गल, इम्तियाज अली, अन्नू मलिक को दिया गया। हिंदी सिनेमा गौरव सम्मान- विमल कुमार, उदय शंकर पाणि, सुखवंत दद्दा, अनंत महादेवन, दिलीप शुक्ला, सीमा पाहवा, संजय छेल, कुकू कोहली, कुमुद मिश्रा और पंकज त्रिपाठी को दिया गया।

हिंदी सिनेमा सेवी सम्मान- सुप्रण सेन, अशोक सरोगी, अनिल नागरथ, मीना के अय्यर, श्री अनूप देव, अजय ब्रह्मात्मज, मनोज श्रीवास्तव, विशाल सरोए, सुभाष साहू, राजेंद्र सिंह को दिया गया। वही छिछोरे को वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म घोषित किया गया, हिंदी सिनेमा सम्मान समारोह की परंपरा के अनुसार छिछोरे फिल्म के निर्माता, निर्देशक और फिल्म के सभी कलाकार और तकनीशियन को व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म बनाने के लिए सम्मानित किया। सुशांत सिंह राजपूत को बेस्ट लीडिंग मैन ऑफ द ईयर घोषित किया गया। हिंदी सिनेमा सम्मान समिति पटना में सुशांत सिंह राजपूत के पिता को सम्मान प्रदान करेगा।

मेरी दिल्ली -मेरी शान

फिल्मी राजनीति

अक्षय गुप्ता

पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का मुंबई दौरा काफी चर्चित हो गया। योगी आदित्यनाथ लखनऊ नगर निगम का बॉण्ड लांच करने के लिए मुंबई स्टॉक एक्सचेंज पहुंचे थे। लखनऊ नगर निगम इस प्रकार अपने शहर में नागरिक सुविधाएं जुटाने के लिए पूंजी बाजार से पैसा जुटाने वाला उत्तर भारत का पहला नगर निगम बन गया। अभी तक देश के 11 नगर निगमों द्वारा पूंजी बाजार से पैसा जुटाया गया था जिसमें अमरावती, विशाखापट्टनम, अहमदाबाद, सूरत, भोपाल, इंदौर, पुणे, हैदराबाद नगर निगम सम्मिलित हैं लेकिन उत्तर भारत के किसी नगर निगम द्वारा अभी तक शेयर बाजार से पैसा जुटाने का साहस नहीं किया जा सका था। ऐसा करते हुए योगी जी ने यह भी दावा किया कि शीघ्र ही वाराणसी, गाजियाबाद, आगरा एवं कानपुर नगर निगमों के बॉण्ड भी शेयर बाजार में जारी किए जाएंगे। सबसे बड़ी बात यह है कि लखनऊ नगर निगम के बॉण्ड शेयर बाजार में जारी किए जाने से पहले ही संस्थागत निवेशकों के माध्यम से 200 करोड़ रुपए एकत्र कर चुका है एवं बाजार में शेयर तथा बॉण्ड जारी करने वाली कंपनियों द्वारा भी इस बॉण्ड की बहुत बढ़िया रेटिंग दी गई है। उत्तर प्रदेश सरकार की इस उपलब्धि पर मीडिया में चर्चा होनी चाहिए थी लेकिन इस घटना को तवज्जो मीडिया में नहीं मिली। मीडिया में तवज्जो मिली उन नेताओं के बयानों को जिन्होंने योगी के मुंबई दौरे को इस दृष्टि से देखा कि वह मुंबई से बॉलीवुड इंडस्ट्री को नोएडा ले जाने के लिए अभियान पर आए हुए हैं एवं इसमें उन्हें कभी भी सफलता नहीं मिल पाएगी। उद्धव ठाकरे से लेकर तमाम नेताओं द्वारा बयान जारी करते हुए इस बात का दावा किया गया कि बॉलीवुड का 100 वर्षों का इतिहास है जिसको बनाने में काफी मशक्कत करनी पड़ी है। इस इतिहास को छीनने का काम कोई भी व्यक्ति या सरकार नहीं कर सकती। सच तो यही है कि किसी स्थान से उसके गौरव एवं इतिहास को छीना नहीं जा सकता है लेकिन उससे गौरवशाली इतिहास दूसरे स्थान पर अवश्य बनाया जा सकता है। महाराष्ट्र के नेताओं द्वारा की गई आलोचना का जवाब देते हुए योगी आदित्यनाथ ने ठीक कहा कि मैं कुछ छीनने नहीं आया हूं बल्कि कुछ देने के लिए आया हूं। बॉलीवुड ही नहीं बल्कि बांग्ला फिल्म उद्योग, तमिल फिल्म उद्योग, तेलुगु फिल्म उद्योग, कन्नड़ फिल्म उद्योग के लोगों को भी मैं नोएडा में फिल्में बनाने एवं अपना कारोबार स्थापित करने के लिए आमंत्रित कर रहा हूं। यही नहीं नोएडा में फिल्म उद्योग को विकसित करने के लिए योगी सरकार द्वारा विदेशी फिल्म निर्माताओं को भी आमंत्रित करने का निर्णय किया गया है।

सच्चाई यही है कि उद्धव ठाकरे सरकार इस समय बॉलीवुड में चल रहे घटनाक्रम से परेशान है। पहले सुशांत मर्डर केस में ठाकरे परिवार के एक व्यक्ति के सम्मिलित होने एवं महाराष्ट्र सरकार द्वारा पूरे मामले को रफा-दफा करने के आरोप लंबे समय तक सोशल मीडिया पर चलते रहे। इसके बाद कंगना राणावत द्वारा उद्धव ठाकरे सरकार को निशाने पर लेने के बाद उनके विरुद्ध जिस प्रकार की कार्यवाही की गई उसको लेकर भी महाराष्ट्र सरकार की काफी किरकिरी हुई। उत्तर प्रदेश, बिहार से रोजी-रोटी की तलाश में मुंबई पहुंचने वाले लोगों के प्रति शिवसेना एवं महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के राज ठाकरे का रवैया किस प्रकार का रहा है यह मुंबई में रहने वाले लोगों को भली-भांति पता है। मुंबई मराठी मानुष की है यह बात संजय राउत द्वारा न जाने कितनी बार दोहराई जा चुकी है। मुंबई में फिल्म उद्योग से जुड़े लोगों को किस प्रकार ठाकरे दरबार में हाजिरी लगानी पड़ती है इस तथ्य को लोग भी भली-भांति जानते हैं। इसलिए यदि योगी आदित्यनाथ द्वारा देश की राजधानी दिल्ली से सटे नोएडा में फिल्म सिटी का निर्माण करने की योजना बनाई गई है तो मराठी मानुष की राजनीति करने वाले लोगों का परेशान होना स्वाभाविक है, क्योंकि कोई भी निर्माता-निर्देशक एक ऐसे माहौल में काम करना पसंद करेगा जहां उसके काम में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न हो। दिल्ली को देश का दिल कहा जाता है तो इसलिए कि यहां देश के प्रत्येक क्षेत्र से काम करने वाले लोगों को जाति, भाषा एवं क्षेत्र के नाम पर किसी प्रकार के भेदभाव का सामना नहीं करना पड़ता। निश्चित रूप से उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था को लेकर सवाल खड़े होते रहे हैं, लेकिन योगी जी द्वारा कानून व्यवस्था के मुद्दे पर काफी सख्त रवैया अपनाया गया है। विशेष रूप से माफिया डानों के विरुद्ध उन्होंने जिस शक्ति के साथ कार्यवाही की है एवं उनके आतंक को जनता के मन से बाहर निकालने के लिए उनके आर्थिक साम्राज्य पर चोट पहुंचाई गई है उससे पूरे देश में उत्तर प्रदेश की छवि बदली है। बहरहाल हिंदी फिल्में बनाने वाले लोगों को हिंदी क्षेत्र में काम करने का अवसर प्रदान करने का जो प्रयास अभी प्रारंभ हुआ है वह कितना सफल होगा, इसका जवाब देना अभी किसी के लिए संभव नहीं है। इसलिए महाराष्ट्र के नेताओं द्वारा इसे व्यर्थ ही मुद्दा बनाने का प्रयास किया जा रहा है। E-Mail : akshaynns@gmail.com

स्थापना दिवस एवं जन्मदिवस समारोह स्थगित

वृंदावन। विख्यात कथावाचक श्रद्धेय नरेश चन्द्र शास्त्री के जन्मदिवस एवं गुरुधाम, वृंदावन के स्थापना दिवस (5 दिसम्बर) के उपलक्ष्य में यादगार रुप से मनाया जाने वाला कार्यक्रम इस वर्ष कोरोना महामारी के चलते स्थगित कर दिया गया। गुरुधाम की ओर से अपील की गई थी कि इस वर्ष सोशल मीडिया के माध्यम से ही श्रद्धेय शास्त्री जी को अपनी शुभकामनाएं दें। बड़ी संख्या में लोगों ने उन्हें जन्मदिवस की शुभकामनाएं प्रेषित की। इसके लिए शास्त्री जी ने सभी लोगों को धन्यवाद दिया।

A COURIER with CARE — a name of Trust
AGC Akash Ganga® Courier Limited
MORE THAN 3000 DESTINATION
Regd. Off. : Opp. Railway Station, Loonkaransar, Distt. Bikaner (Raj.)
Corporate Office : 1310-11-12, D.B. Gupta Road (Naiwala), Karol Bagh, New Delhi-05
Ph. : 011-28752881
E-mail : delhi@akashganga.info, Website : www.akashganga.info

ललित एण्ड पार्टी
★ भगवती जागरण
★ चौकी
★ भजन संध्या
★ लेडीज़ संगीत
★ संगीत कार्यक्रम

दूरभाष : 9899193399, 25218278, 25216338
304, पॉकेट-1, पश्चिम पुरी, शक्ति मार्किट रोड़, नई दिल्ली-63
MDW/04

Ananda® GHEE
Anand karo!
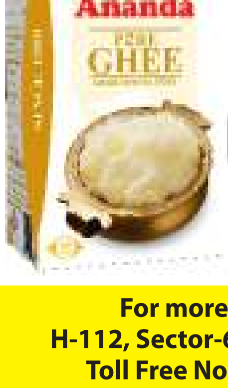

दाने दाने में आनंद
For more details contact :
H-112, Sector-63, Noida-201301, U.P.
Toll Free No. ☎ 1800-102-8397
customercare@ananda.in
www.ananda.in

नागरिक अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित

नई दिल्ली। सहकार भारती दिल्ली प्रदेश एवं यूनाइटेड थ्रिफ्ट एंड क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटिज़ फेडरेशन ऑफ दिल्ली लिमिटेड के संयुक्त तत्वावधान में 3 दिसंबर को भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ के नव निर्वाचित अध्यक्ष सहकारिता शिरोमणि दिलीप भाई संघाणी अमरेली के पूर्व चार बार लोकसभा सदस्य और गुजरात के पूर्व सहकारिता मंत्री, नेफेड के उपाध्यक्ष, नेशनल फेडरेशन ऑफ स्टेट को. ओ.बैक के पूर्व अध्यक्ष का नागरिक अभिनंदन कार्यक्रम भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ के बोर्ड कक्ष में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में दिल्ली की विभिन्न सहकारी संस्थाओं और फेडरेशन के पदाधिकारी उपस्थित हुए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता सहकार भारती और क्रेडिट सोसायटिज़ फेडरेशन के अध्यक्ष सुनील गुप्ता द्वारा की गई। कार्यक्रम में राजेश गोयल दिल्ली राज्य हाउसिंग फाइनेंस कार्पोरेशन के अध्यक्ष, जय श्री स्वामी विवेकानंद हेल्थ एंड केयर कोऑपरेटिव सोसायटी और हनुमान धाम के अध्यक्ष सुशील तायल, हनुमान धाम रामनगर उत्तराखंड के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सुनील गोयल, मां झंडेवाला को-ऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड के अध्यक्ष आर.के. शर्मा और उपाध्यक्षा श्रीमती सोमा राय, इंद्रप्रस्थ विस्तार आवासीय सहकारी महासंघ के निदेशक सुरेश बिन्दल, नेशनल लेबर को. ओ. फेडरेशन के निदेशक अशोक डबास, दिल्ली अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक फेडरेशन के सचिव एम. एच क्यू बैग, सहकार भारती दिल्ली प्रदेश महामंत्री भारत भूषण बंसल, फेडरेशन के महामंत्री प्रवेश कुमार गुप्ता, सहकार भारती दिल्ली के कोषाध्यक्ष मनीष जैन, भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एन. सत्यनारायण, इंद्रप्रस्था उपभोक्ता सेवा सरकारी महासंघ के सचिव राजेंद्र शर्मा, दिल्ली प्रदेश बुनकर हथकरघा के सचिव फूल सिंह, सहकार भारती दिल्ली बुनकर प्रकोष्ठ प्रमुख धर्मपाल, फार्मा एग्रो कोऑपरेटिव मार्केटिंग सप्लाई मल्टी स्टेट सोसाइटी के सचिव सुनील खत्री, सहकार भारती दिल्ली प्रदेश के गृह निर्माण प्रकोष्ठ प्रमुख मदन खत्री, बैंकिंग प्रकोष्ठ प्रमुख भारत भूषण आर्य, महिला प्रकोष्ठ सह प्रमुख श्रीमती बबीता शर्मा, श्रीमती लक्ष्मी, श्रीमती रमा, सुघड़ स्वयं सहायता समूह अध्यक्ष श्रीमती चित्रा अरोड़ा, आर्यावर्त सोलर को. ओ. सोसाइटी के सचिव चेतन प्रजापति, रोहिल्ला टांक बहु राज्य क्रेडिट सोसायटी के सचिव चंद्र प्रकाश रोहिल्ला और देवेंद्र रोहिल्ला, ग्रीन फील्ड बहु राज्य सहकारी संस्था के अध्यक्ष सेजल कुमार, राजपूत क्रेडिट सोसायटी के अध्यक्ष जितेंद्र राजपूत, कोली क्रेडिट सोसायटी के अध्यक्ष चिरंजीलाल, सहकार भारती शाहदरा जिला अध्यक्ष राजेंद्र सिंघल आदि प्रमुख सहकारी संस्थाएं के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

।। जय श्री बालाजी ।।

श्रद्धांजलि सभा

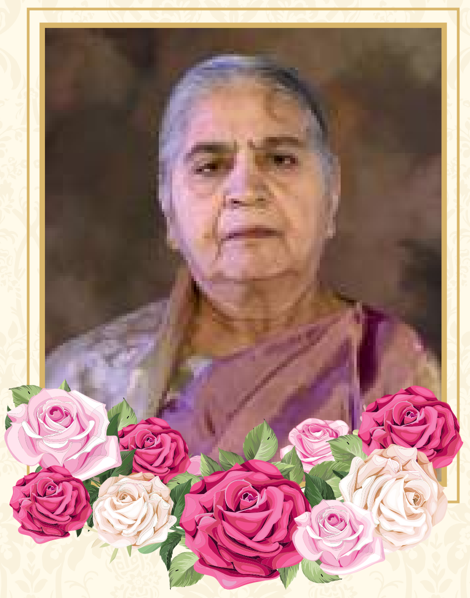

हमारी स्नेहमयी, पूजनीय माताजी

श्रीमती प्रेमलता सिंहल

(धर्मपत्नी स्व० श्री दया कृष्ण सिंहल)

का स्वर्गवास वीरवार दिंनाक 26 नवम्बर 2020 को हो गया है

श्रद्धांजलि सभा

मंगलवार, दिनांक 8 दिसम्बर 2020, दोपहर 3 से 4 बजे

सभा स्थल : बावा नत्था सिंह वाटिका

पंजाबी बाग क्लब के पीछे, वैस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली

शोकाकुल

सुशील सिंहल - रश्मि सिंहल (पुत्र - पुत्र वधु)

निखिल - युविका सिंहल (पौत्र-पौत्र वधु)
आदित्य सिंहल (पौत्र)
अव्यान सिंहल (पडपौत्र)

रेणु - हरिकृष्ण गुप्ता (पुत्री-दामाद)
इन्दु - नरेश मित्तल (पुत्री-दामाद)
गीतिका - शगुन गुप्ता (पौत्री-दामाद)

BALAJEE EVENTZ

अनुरोध :
आप सभी से अनुरोध है कि कोरोना संक्रमण को देखते हुए दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए श्रद्धांजलि सभा के समय अपने घर से ही प्रार्थना करें। आपका स्नेह एवं आशीर्वाद परिवार की सबसे बड़ी शक्ति है।

जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

मेरी दिल्ली परिवार के सदस्य, सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं व्यवसायी रोहिणी निवासी अमित अग्रवाल (चतुर्भुज एंड कंपनी) के सुपुत्र स्पर्श अग्रवाल को जन्म दिवस (5 दिसंबर) की हार्दिक शुभकामनाएं। मेरी दिल्ली परिवार उनके दीर्घायु एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

मेरी दिल्ली हिन्दी दैनिक
की खबरें अपने मोबाईल पर पाने के लिए Like करें फेसबुक पर
www.facebook.com/meridelhinews

क्रांतिकारी राजनीतिज्ञ प्रकाश करात

प्रकाश करात एक भारतीय राजनीतिज्ञ है। वह वर्ष 2005 से भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के महासचिव बने हुए है। उनका जन्म 7 फरवरी 1948 को बर्मा (म्यांमार) में हुआ हुआ था।

पारिवारिक विवरण

प्रकाश करात ने वृंदा करात से वर्ष 1975 में विवाह किया। उनके एक भी बच्चे नहीं। प्रकाश करात के पिता बर्मा रेलवे में क्लर्क के रूप में काम करते थे। प्रकाश करात नायर जाति के मलयाली है। उनका परिवार केरल के एलापुल्ली, पलक्कड, का रहने वाला था।

व्यवसाय

प्रकाश करात ने चेन्नई के मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज में अध्ययन कार्य किया था। वह अर्थशास्त्र में स्नातक करने के लिए मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज में दाखिला लिए थे। उन्होंने स्नातक स्तर की पढ़ाई में सर्वश्रेष्ठ छात्र के लिए पुरस्कार जीता था। वर्ष 1970 में, प्रकाश करात को 'आधुनिक भारत में भाषा और राजनीति' में शोध कार्य के लिए एडिनबर्ग विश्वविद्यालय से एम. एससी की डिग्री मिली थी।

वर्ष 1985 में वह भाकपा की केंद्रीय समिति (एम) के लिए चुने गए जहाँ उन्होंने पार्टी स्तर पर क्रांतिकारी परिवर्तन को अन्जाम दिया और पार्टी की साख बढाई।

वर्ष 1992 में, प्रकाश करात को सीपीआई (एम) की आवश्यक प्रबंधकीय निकाय 'पोलित ब्यूरो' का सदस्य बनाया गया था।

D वर्ष 2005 में उन्हे सीपीआई का महासचिव (एम) नियुक्त किया गया जोकि पार्टी के अन्दर एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी वाला पद था। यह पद उस समय पार्टी में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले सिर्फ दिग्गज लोगो को ही दिया जाता था। ऐसी कठिन परिस्थिति में उन्होंने तीन महत्वपूर्ण वाम दलो के साथ तत्कालीन यूपीए सरकार (संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार) को समर्थन दिया। सरकार के लिए यह समर्थन उस समय महत्वपूर्ण स्थान रखता था।

प्रकाश करात लेफ्ट वर्ल्ड बुक के एम.डी. भी है जोकि वाम दलों का प्रमुख प्रकाशन हॉउस है।

वह सम्पादकीय बोर्ड के सदस्य भी है जोकि मार्क्सिस्ट थिओरेटीकल जर्नल का प्रकाशन करते है।

उपलब्धियां

प्रकाश करात ने टोक्यो ओलंपिक में अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया था। वह पाँच सर्वाधिक बिकने वाली किताबो के लेखक भी हैं। ये पाँच पुस्तकें हैं- भाषा, राष्ट्रीयता और भारत में राजनीति (1972), जीतने के लिए एक विश्व - कम्युनिस्ट घोषणापत्र (1999) पर निबंध, समय और महाद्वीपों के उस पार: विक्टर कियेरन (2003) को एक श्रद्धांजलि, अधीनस्थ सहयोगी: परमाणु करार और भारत और अमेरिका के सामरिक संबंधों (2008), राजनीति और नीतियां (2008)

किताबें और वृत्तचित्र

प्रकाश करात पाँच पुस्तकों के लेखक हैं:

1. भाषा, राष्ट्रीयता और भारत में राजनीति (1972)
2. जीतने के लिए एक विश्व-कम्युनिस्ट घोषणापत्र (1999) पर निबंध
3. समय और महाद्वीपों के उस पार: विक्टर कियेरन (2003) को एक श्रद्धांजलि
4. अधीनस्थ सहयोगी: परमाणु करार और भारत और अमेरिका के सामरिक संबंधों (2008)
5. राजनीति और नीतियां (2008)

भगवान क्यों नहीं दिखते?

एक यहूदी कहानी है- किसी ने रब्बी से पूछा, ''आजकल लोगों को भगवान क्यों नहीं दिखते?''

उन्होंने उत्तर दिया, ''क्योंकि अब कोई इतना झुक कर प्रार्थना नहीं करता।''

आज का होड़ भरा समाज, उसके मूल्य, उसकी परिस्थितियां ऐसी सोच बना रही हैं। मनोवैज्ञानिक कहते है कि समस्या आने पर लोग बाहरी लोगों की मदद मांगते हैं, परिवार की नहीं। सड़क से लेकर हर जगह सिर्फ हिंसा दिखाई देती है।

घरेलू हिंसा के मामले भी बढ़े हैं। इन सबका कारण ईश्वर से दूरी और आत्माभिमान, गर्व की बढ़ोतरी है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि वातावरण के प्रदूषण में भी किसी न किसी रूप में उसी हिंसा का योगदान है। धर्म रक्षक हों या नास्तिक, सभी ने उस परमात्मा से दूरी बढ़ा ली है पर उसी के नाम पर मरने-मारने को तैयार हैं।

ये कैसे धार्मिक हैं जो भगवान की सृष्टि में उथल-पुथल मचाकर सोचते हैं, अच्छा काम कर रहे हैं। ये हर किसी को शंकित दृष्टि से देखते हैं। धर्म गुरु समझाकर हार गए, धर्मग्रंथों को अनसुना कर मनमानी चाल चलने वालों न प्रभु के काम कर रहे हैं न अपनी भलाई के।

कुरान में लिखा है, ''एक तरह के इंसान होते हैं जिनका मकसद जमीन पर हर जगह शैतानी करना होता है, सब कुछ मिटाना होता है, पर खुदा को शैतानी पसंद नहीं है।''

सभी ज्ञानी कहते हैं, धर्म को सीढ़ियों में नहीं खुद विचारों के सहारे जिंदा रखा जा सकता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर का मानना है कि धर्मांध लोग धर्म और सच को अपने हाथों में सुरक्षित समझते हैं पर उनकी पकड़ ऐसी होती है कि वे उसकी हत्या कर देते हैं। अहंकारियों के कारण ही भगवान और इंसानों के बीच ही नहीं, इंसानों के बीच भी दूरी बढ़ती जा रही है। गुस्सा और असहिष्णुता इसका कारण है और ये मनुष्य की दुर्बलता के सूचक हैं। लाओत्से मानते हैं कि दुनिया में शांति के लिए राष्ट्रों में, राष्ट्रों के लिए शहरों में, शहरों के लिए पड़ोसियों में और उनके लिए घरों में एक-दूसरे के प्रति समझ की जरूरत है। शांति बनाए रखने के लिए हममें से प्रत्येक को अपना दिल टटोलना पड़ेगा।

सिद्धपीठों में प्रमुख है हरिद्वार का मनसा देवी मंदिर

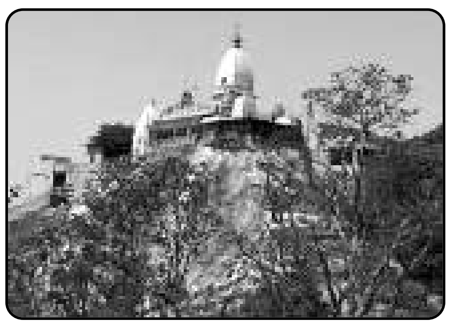

प्रसिद्ध मनसा देवी माता का मंदिर देवभूमि हरिद्वार में हरकी पैड़ी के पास गंगा के किनारे स्थित है। नवरात्रि के दिनों में यहां माता के दर्शनों के लिए लंबी लंबी लाइनें तो लगती ही हैं साथ ही सामान्य दिनों में भी यहां श्रद्धालुओं की काफी अच्छी संख्या रहती है। जिसको देखते हुए मंदिर प्रशासन ने माता के दर्शनों और श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए व्यापक व्यवस्था की है।

मंदिर चूंकि पहाड़ी पर स्थित है इसलिए यहां तक पहुंचने के लिए ट्रॉली का उपयोग किया जाता है। यदि कोई महंगी ट्रॉली से सफर नहीं करना चाहे तो उसके लिए पहाड़ी पर ही सड़क मार्ग भी बनाया गया है जहां पैदल यात्रा के साथ ही स्थानीय ऑटो रिक्शा के जरिये पहुंचा जा सकता है। यहां चलने वाली ट्राली श्रद्धालुओं को खूब आकर्षित करती है और इसके चलते यह धार्मिक पर्यटन स्थल का रूप ले चुका है। यहां चलने वाली ट्राली को 'मनसा देवी उड़नखटोला' के नाम से भी जाना जाता है। रोपवे से श्रद्धालुओं को मंदिर लाने ले जाने का काम सुबह आठ बजे से सायं पांच बजे तक चलता है। दिन में यह 12 से 2 बजे तक भोजन के लिए यह सेवा बंद कर दी जाती है।

यहां स्थित माता मनसा देवी को सिद्ध पीठों में प्रमुख माना जाता है। यह हरिद्वार स्थित तीन सिद्ध पीठों में से एक है। अन्य दो सिद्धपीठ हैं चंडी देवी मंदिर और माया देवी मंदिर। मान्यता है कि जो श्रद्धालु यहां सच्चे मन से मां की पूजा अर्चना कर मुराद मांगते हैं माता उनकी इच्छा जरूर पूरी करती हैं। धार्मिक ग्रंथों और पुराणों के मुताबिक मनसा देवी का जन्म संत कश्यप के मस्तिष्क से हुआ। वह राजा वासुकी की पत्नी हैं। कहा जाता है कि मनसा देवी ने भगवान शंकर की कठोर तपस्या किया और साथ ही वेदों का अध्ययन भी किया जिसके फलस्वरूप उन्हें कृष्ण मंत्र प्राप्त हुआ जिसे कल्पतरु कहा जाता है। देवी ने बाद में पुष्कर में कई युगों तक तप किया जिससे प्रसन्न होकर भगवान कृष्ण ने उन्हें वरदान दिया कि देवी तुम्हारी तीनों लोकों में पूजा होगी।

पुराणों में उल्लेख मिलता है कि आशुतोष भगवान की पुत्री मनसा को ऋषि कश्यप ने अपने संरक्षण में पाला और सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा ने उनका नामकरण किया। ब्रह्मा ने नामकरण के बाद बताया कि कोई भी विष इस देवी के सामने तुच्छ है इसलिए इस देवी का नाम विषहरि होगा। इसी कारण समस्त नागों और भगवान शिव ने उन्हें स्वीकार किया। मनसा देवी को भगवान शिव की मानसपुत्री के रूप में भी जाना जाता है।

मनसा देवी की पूजा ज्येष्ठ मास की दशहरा तिथि यानी गंगा दशहरा के दिन बंगाल में कई जगह की जाती है। मनसा देवी की पूजा के बाद ही नागों की पूजा करने का प्रचलन है। मान्यता है कि जो व्यक्ति देवी के बारह नामों का उच्चारण करता है, उसके वंशजों को भी सर्प भय नहीं रहता। देवी के यह बारह नाम इस प्रकार हैं. जरत्कारू, जगदगौरा या जगतगौरी, मनसा, सियोगिनी, वैष्णवी, नागभगिनी, शैवी, नागेश्वरी, जगतकारुप्रिया, आस्तिकमाता और विषहरी।

मनसा देवी के मंदिर आने वाले श्रद्धालु अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए यहां लगे वृक्षों में एक धागा बांधते हैं। जब उनकी मनोकामना पूर्ण हो जाती है तो वह पुनः मंदिर आते हैं और वह धागा खोलकर मनसा देवी की पूजा करते हैं। श्रद्धालुओं की ओर से मनसा देवी की पूजा के दौरान माता को फल, नारियल, फूल और श्रृंगार सामग्री अर्पित की जाती है।

एकादशी व्रतः आप क्या चाहते हैं भौतिक लाभ या श्रीकृष्ण प्रेम

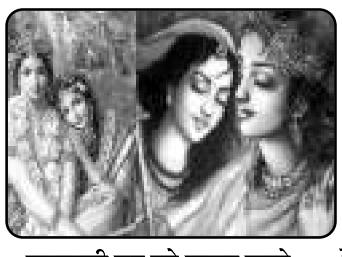

एकादशी व्रत को पालन करने के दो भिन्न-भिन्न तरीके हैं।

पहला- शुद्ध भक्ति विचार

दूसरा- कर्मकाण्ड (स्मात) विचार

शुद्ध भक्त भगवान श्रीकृष्ण एवं उनके भक्तों की संतुष्टि के लिए ही एकादशी व्रत का पालन करते हैं न कि भौतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए।

परंतु कर्मकाण्डी (स्मार्त), एकादशी व्रत, अन्य व्रतों का पालन दुनियावी इच्छाओं की पूर्ति के लिए करते हैं। वास्तव में एकादशी व्रत श्रीकृष्ण प्रेम की प्राप्ति की शुद्ध भक्ति साधानाओं में से एक साधना है। कर्मकाण्ड में बंधे व अज्ञानी जीवों (मनुष्यों) को भौतिक लाभों का प्रलोभन देकर उन्हें एकादशी व्रत का पालन करने के लिए प्रेरित किया जाता है परंतु यह बात शुद्ध भक्तों के ऊपर लागू नहीं होती है।

क्यों बिगड़े हैं मौसम के मिजाज, ज्योतिष से जानें इसका राज

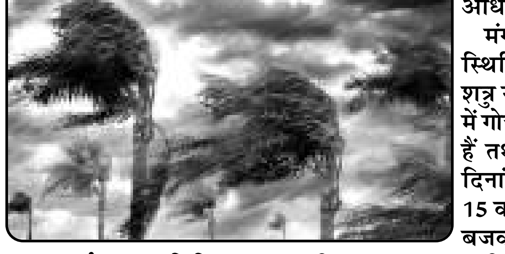

आचार्य वराहमिहिर द्वारा मेदिनी निर्मित मेदिनी ज्योतिष के अनुसार भारत की प्रभाव राशि मकर है। वर्तमान में मकर राशि का स्वामी शनि अपने शत्रु मंगल की राशि वृश्चिक में गोचर कर रहा है। मकर जल तत्त्व-प्रधान राशि हैं। संजोग से मकर राशि के स्वामी शनि भी एक जल तत्व-प्रधान राशि वृश्चिक में गोचर कर रहे हैं। गुरु, जो की ज्योतिष भी एक जल तत्त्व के ग्रह हैं तथा वर्तमान स्थिति अग्नि तत्व प्रधान राशि सिंह में गोचर कर रहे हैं। गुरु शुक्रवार दिनांक 08.01.16 को प्रात: 10 बजे वक्री होने के बाद उत्तर-भारत में शीत ऋतु जोर पकड़ेगी तथा इस वर्ष कोहरा अधिक पड़ेगा।

मंगल वर्तमान स्थिति में अपनी शत्रु राशि कन्या में गोचर कर रहा हैं तथा गुरूवार दिनांक 24.12. 15 को प्रात: 06 बजकर 16 मिनट पर तुला राशि में प्रवेश करेंगे जिससे ठंड का प्रकोप बढ़ेगा। इस वर्ष की कुंडली के अनुसार विक्रमी संवत 2072 शनिवार दिनांक 21.03.15 को आरंभ हुआ था। शनिवार से वर्ष के प्रारंभ होने की वजह से इस वर्ष का नाम कीलक है। जिसका राजा शनि और मंत्री मंगल है।

ज्योतिषशास्त्रनुसार जब भी संवत् में राजा शनि होता है तो बे-मौसम वर्षा व बाढ़ अवश्य आती है और मौसम का मिजाज अप्रत्याशित तथा अकल्पनीय होता है जैसा कि इसका प्रभाव पहली मार्च से ही दिखना आरंभ हो गया था और मार्च में वर्षा तथा बर्फबारी के कई साल पुराने रिकॉर्ड टूट गए। इस वर्ष शनि के कारण नए रोग व अजीबो-गरीब बीमारियों का दबदबा रहा। शनि ग्रह, नेताओं में आपसी मतभेद, वैमनस्य, तनावपूर्ण संबंध, विक्षुब्ध वातावरण, विरोध, टकराव, अपमानित करने जैसे कृत्य करवाता है।

संवत् का मंत्री मंगल होने से आतंकवाद, चोरी, आगजनी, लूट, अग्निकांड, बिस्फोट, वायु दुर्घटनाएं, रेल हादसे, हिंसक उपद्रव आदि की बहुतात रहती है। इस बार राजा व मंत्री परस्पर एक-दूसरे के शत्रु हैं, अत: धार्मिक उन्माद, हिंसक उपद्रव, संसद में कोहराम, किसी प्रिय नेता या प्रसिद्ध हस्ती से विछोह, भूकम्प, बाढ़, मुस्लिम देशों के आतंक से, शांति प्रिय देशों में अशांति, पैट्रोल, डीजल, सोने, गेहूं तथा अन्य पीले रंग की वस्तुओं की कीमतों में अचानक वृद्धि बनी रहेगी।

ऐसा गांव जहां घरों में नहीं हैं दरवाजे चोरी करने वाला हो जाता है अंधा

श्री शनि देव जी का पावन-पूजा धार्मिक स्थान शनि शिंगनापुर (शिरडी, महाराष्ट्र से लगभग 60 किलोमीटर दूर) में स्थित है। कलियुग में चमत्कार का एक अनूठा दृश्य यहां देखने को मिलता है। इस गांव में किसी भी घर में खिड़की, दरवाजे नहीं दिखाई देते। बहुमूल्य आभूषण व वस्तुएं यूं ही रखी रहती हैं। सबसे बड़ा आश्चर्य और विशेषता यह है कि वहां कभी चोरी नहीं होती।

शिवलिंगी की भांति दृष्टिगत होते यहां खुले चबूतरे पर शनिदेव जी प्रतिष्ठित हैं, उनके प्रतीक स्वरूप शनि प्रतिमा का मंदिर बनाने का कई बार प्रयास किया गया किंतु निर्माण के दूसरे ही दिन दीवार ध्वस्त मिलती थी। शनिदेव जी ने स्वप्न द्वारा एक ब्राह्मण को सूचित किया कि वे स्वतंत्र रहना चाहते हैं, मंदिर निर्माण की आवश्यकता नहीं है।

यहां की लोक मान्यता है कि यहां देवता हैं लेकिन मंदिर नहीं। घर है लेकिन दरवाजे नहीं। वृक्ष हैं पर छाया नहीं। भय हैं पर शत्रु नहीं। यहां शनिदेव स्वयं अपने भक्तों के घरों की रक्षा करते हैं। यहां स्त्रियों का शनि विग्रह की सेवा करना और तेलाभिषेक करना वर्जित है।

द्रौपदी के अनुसार ऐसी महिलाओं से हमेशा खुश रहते हैं पुरुष

घर-गृहस्थी को चलाने के लिए किसी भी महिला की भूमिका अहम होती है। शुद्ध आचरण वाली महिला अपने सदगुणों की महक से घर-परिवार की बगिया को महकाती है। परिवार में सुख, शांति का माहौल बना रहे इसके लिए द्रौपदी से सीख लें। महाभारत में द्रौपदी ने सत्यभामा को बताई थी कुछ खास बातें जिससे अगर महिलाएं अपना लें तो उनके पति हमेशा उनसे खुश रहेंगे।

कुछ काम ऐसे होते हैं जो सुहागन महिलाओं को नहीं करने चाहिए-

d बहुत सारी महिलाएं तंत्र-मंत्र, औषधि आदि के द्वारा पति को वश में करने का प्रयत्न करती हैं ऐसा न करें। पति को ये बात पता चल जाए तो वैवाहिक संबंध तो खराब होते ही हैं साथ ही बुरे काम का बुरा फल ही प्राप्त होता है।

d सदा वही बात करें जिससे किसी को खुशी मिले। जिससे किसी का अपमान हो या उसे दुख मिले ऐसी बात नहीं करनी चाहिए।

d द्रौपदी सत्यभामा को बताती हैं कि मैंने शादी के बाद सबसे पहले अपने पांडव परिवार के सभी रिश्तों की जानकारी प्राप्त करी। ससुराल के सभी रिश्तों की पूरी जानकारी होनी चाहिए। एक भी रिश्ता चूकना नहीं चाहिए।

d सुखी दांपत्य जीवन को बनाए रखने के लिए महिलाओं को बुरे आचरण वाली और चरित्रहीन महिलाओं का संग नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से उनकी गृहस्थी में समस्याएं आती हैं।

d किसी भी काम में आलस्य नहीं करना चाहिए। बिना समय गंवाए जो भी काम हो उसे पूरा कर लेना चाहिए। अपने काम में दक्ष पत्नी सदा पति की प्रिय बन कर रहती है।

d महिलाओं का दरवाजे पर खड़े रहना या खिड़की से झांकते रहना अच्छा नहीं होता समाज में उनको हेय दृष्टि से देखा जाता है।

d अनजाने लोगों से बातचीत करना अच्छा नहीं होता।

d ससुराल के किसी भी सदस्य की निंदा न करें।

अनुशासन का पाठ

बात उस समय की है, जब पूर्व राष्ट्रपति और शिक्षाविद् डॉ. जाकिर हुसैन जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति थे। जाकिर साहब बेहद अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। वह चाहते थे कि जामिया मिल्लिया इस्लामिया के छात्र न सिर्फ पढ़ाई-लिखाई में अव्वल रहें, बल्कि वेशभूषा से लेकर व्यवहार तक में दूसरे के लिए एक मिसाल बनें। उन्होंने यह निर्देश दे रखा था कि विद्यार्थी साफ-सुथरे कपड़े पहनें और जूते हमेशा चमका कर रखें। इस संबंध में उन्होंने एक लिखित आदेश भी निकाला, मगर छात्रों ने उस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया।

छात्र अपनी मर्जी से चलते थे, जिसके कारण विश्वविद्यालय का अनुशासन बिगड़ने लगा। यह देखकर डॉ. हुसैन ने छात्रों को एक अलग ही तरीके से सुधारने का निर्णय किया। एक दिन वह कैंपस के गेट पर ब्रश और पॉलिश लेकर बैठ गए और हर आने-जाने वाले छात्र के जूते साफ करने लगे। यह देखकर सभी छात्र बहुत लज्जित हुए। उन्होंने अपनी भूल मानते हुए डॉ. हुसैन से क्षमा मांगी और अगले दिन से साफ-सुथरे कपड़ों में और जूतों पर पॉलिश करके आने लगे। इस तरह विश्वविद्यालय में अनुशासन कायम हो गया। बाद में इस घटना को लेकर जब लोगों ने डॉ. जाकिर हुसैन से सवाल किया तो उन्होंने कहा कि किसी भी संस्था में अनुशासन लाने के लिए उसके मुखिया को स्वयं उदाहरण पेश करना पड़ता है।

लोगों को जिस कार्य के लिए प्रेरित किया जाना है, उस पर पहले स्वयं अमल करना होगा, तभी वह प्रभावशाली होगा। जब हम स्वयं अनुशासित होंगे, तभी दूसरों को भी प्रेरित कर पाएंगे।

ब्रह्मांड में सबसे सुंदर ग्रह है हमारी धरती

वैज्ञानिकों ने हमारी धरती को सबसे खूबसूरत ग्रह बताया है। उनका मानना है कि आज हम जहां रह रहे हैं, वह जगह हजारों-लाखों साल पुरानी है और आज भी ऐसी कई चीजें हैं, जिन्हें हम मानव सभ्यता की शुरुआत कह सकते हैं। हालांकि वैज्ञानिकों की चिंता इस बात को लेकर भी है कि हम मानव सभ्यता की पहचान वाली कई चीजों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। हम सभी को मिलकर इसे रोकना होगा, ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को कुछ दे सकें। कई देशों में आज स्वच्छ हवा भी नहीं मिल पा रही है। हालांकि यह अच्छी बात है कि लोग पर्यावरण के प्रति जागरूक हो रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र ने कहा है कि हमें वायु शुद्ध करने की ओर ध्यान देना होगा, जिससे बड़े नुकसान को बचा सकें। यहां जानते हैं धरती एवं पर्यावरण से जुड़ी वह जानकारी, जो इंटरनेट पर ट्रेंड में रहीं-

पेड़ बचाना सबसे फायदेमंद, इसलिए

पेपरलेस वर्किंग जरूरी

R टॉयलेट पेपर बनाने के लिए 27 हजार पेड़ काटते हैं हर दिन।

R एल्युमीनियम ऐसा धातु है, जिसे हजारों बार रिसाइकल किया जा सकता है। हर साल 80 ट्रिलियन एल्युमीनियम उपयोग होते हैं।

R अमेरिकी कंपनियां इतने कागज का इस्तेमाल करती हैं, जिसे धरती पर तीन बार लपेट सकते हैं। ऐसे में कारोबार जगत का पेपरलेस वर्क वाला कॉन्सेप्ट प्रशंसनीय है।

R हम प्रतिदिन 75 हजार पेड़ कटने से बचा सकते हैं, लेकिन अखबार एवं अन्य कागज की रिसाइकलिंग अनिवार्य करनी होगी।

R प्लास्टिक की थैलियां एवं अन्य मटीरियल किसी भी रूप में समुद्र में जाता है। उनके दुष्प्रभाव से हर साल 10 लाख समुद्री जीव मारे जाते हैं।

R धरती पर उपलब्ध पानी का केवल एक प्रतिशत ही उपयोग किया जा सकता है। शेष 97 प्रतिशत समुद्र में और 2 प्रतिशत बर्फ के रूप में जमा हुआ है।

अगर अंटार्कटिका की बर्फ पिघल जाए तो...

R अंटार्कटिका पांचवां बड़ा महाद्वीप है। 1 करोड़ 40 लाख वर्ग किलोमीटर तक फैला है। करीब 2,000 लोग अस्थायी तौर पर रिसर्च केंद्रों में रहते हैं।

R अंटार्कटिका यूरोप से बड़ा और ऑस्ट्रेलिया से दुगना है।

R वहां बारिश नहीं के बराबर होती है, इसलिए उसे सूखा मैदान कहा जाता है।

R अगर अंटार्कटिका की बर्फ पिघल जाए, तो समुद्र का जलस्तर 200 फीट बढ़ सकता है।

घर का प्रदूषण दूर करने की ताकत रखते हैं खास पौधे

घर के भीतर शुद्ध हवा चाहिए तो खास पौधों को परिवार का सदस्य बनाना काफी फायदेमंद रहेगा। यह खास पौधे खराब हवा को सोखकर ऑक्सीजन बाहर निकालते हैं। ये पौधे कमरों के भीतर लगाए जा सकते हैं और प्रदूषण से लड़ने की ताकत रखते हैं। हॉर्टिकल्चर विशेषज्ञ इन दिनों एक ट्रेंड पर जोर दे रहे हैं, जिसमें कहा जा रहा है कि घर में शुद्ध हवा उगाएं। विभिन्न अध्ययन से यह बात साबित हो चुकी है कि यह खास पौधे कमरों की हवा में ऑक्सीजन बढ़ाने का काम करते हैं। हॉर्टिकल्चर स्पेशलिस्ट अतुल वशिष्ठ, जो होम एंड गार्डन लाइफ डॉट कॉम के संचालक भी हैं, उन्होंने बताया कि कमरे की हवा को छानने के लिए पीस लिली, एलो, रबर प्लांट, पोथोस, गरबेरा डेजी, स्पाइडर प्लांट, स्नैक प्लांट,

वीपिंग फिग, हर्ट लीफ आदि पौधे घर के भीतर लगाए जा सकते हैं। उन्होंने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय बाजार स्तर पर इन पौधों को मान्यता मिल चुकी है। घर के भीतर जो पौधे लगाए जाते हैं वह हवा तो साफ करते ही है साथ ही इंटीरियर डेकोर का भी खास हिस्सा बनते हैं यानी घर को सजाने के साथ स्वास्थ्य का भी सुधार इन पौधों से होता है। घर ही नहीं, कार्यालयों में भी इन पौधों को लगाने का अच्छा लाभ मिलता है।

ज्ञानामृत

k मनुष्य नवजात शिशु जैसा है, विकास ही उसका बल है।

k मनोरंजन नवीनता का दास है और समानता का शत्रु।

k बुरी बातों को भूल जाना चाहिए, बुरी बातों को ही देखते रहेंगे तो इंसान हैवान बन जाएगा।

k गलती तो कोई भी कर सकता है, लेकिन मूर्ख के अलावा कोई उसे जारी नहीं रखेगा।

k आनंद का मुख्य सिद्धांत तंदुरुस्ती है और तंदुरुस्ती का मुख्य सिद्धांत कसरत।

k जो शत्रु तुम पर आक्रमण करते हैं उनसे मत डरो। उन मित्रों से डरो जो तुम्हारी चापलूसी करते हैं।

k ज्ञान अभिमानी होता है कि उसने बहुत कुछ सीख लिया। बुद्धि विनीत होती है कि वह अधिक कुछ जानती ही नहीं।

k जो व्यक्ति जनता के पैर बनकर चलता है उसे कांटे नहीं चुभ सकते।

सात तरह के दाता

पहले वे जो आपसे आप स्वयं और उदारता से देते हैं, लेकिन अपने को ही देते हैं: हम उन्हें स्वयं दाता कह सकते हैं, दूसरे, वे जो बिना सोचे-समझे, बिना किसी असली या ऊंची प्रेरणा के देते हैं: इन्हें अवसर के दाता कह सकते हैं।

तीसरे वे जो अपनी अंतरात्मा या आत्म-सम्मान को झुठलाने के लिए देते हैं।

अपने द्वारा की गई बुराइयों से मुक्ति हेतु प्रायश्चित रूप में देते हैं: इन्हें पश्चातापी दाता कहेंगे।

चौथे वे जो दिखावे के लिए अपनी उदारता के लिए वाहवाही लूटने के लिए देते हैं: ये दिखावटी दाता हैं पांचवें वे जो इसलिए देते हैं, क्योंकि दूसरे लोग देते हैं, क्योंकि उनसे देने की उम्मीद की जाती है और न देने पर शर्म महसूस करते हैं और इसलिए अनिच्छा से देते हैं: ये रूढ़िवादी दाता हैं।

छठे वे जो फर्ज समझ कर देते हैं, न कि प्यार से: ये नैतिक दाता हैं।

सातवें वे जो येसु की भावना से प्रेरित होकर देते हैं: जो इसलिए देते हैं कि अपने पड़ोसी को अपनी तरह प्यार करते हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि उसकी मदद करने की तमन्ना रखते हैं: ये आध्यात्मिक दाता हैं। आप इनमें से किस श्रेणी के दाता हैं?

oSokfgd thou dks [kq'kuqek cukus dsfVIl

हर नववधू के मन में शादी और पति को लेकर कुछ आकांक्षाएं होती हैं। अगर उसका पार्टनर इन्हें समझ लेता है तो वैवाहिक जीवन बहुत सुखद तरीके से व्यतीत होता है...

शादी की बात चलते ही लगभग हर लड़की के दिमाग में तमाम तरह के सपने पलने लगते हैं। सही जीवनसाथी मिलने पर उसकी उम्मीदों को पंख लग जाते हैं। अपने साथी को लेकर वह तमाम तरह की कल्पनाएं करती है। हर लड़की चाहती है कि उसका साथी सच्चा प्यार करने वाला, खुशमिजाज और आकर्षक व्यक्तित्व वाला हो। आमतौर पर लड़कियों के दिमाग में अपने साथी को लेकर यही सोच रहती है कि उसके पार्टनर में ढेर सारी विशेषताएं हों। वह सबसे अलग और खास हो। कुछ खास विशेषताएं जिनके बारे में लगभग हर लड़की सोचती है।

h मेरा जीवनसाथी मेरे सुख-दुख में साथ निभाए।

h वह ईर्ष्या करने वाला बिल्कुल न हो।

h यह समझे कि शादी एक मजबूत संस्था है और इस संस्था का कोई विकल्प नहीं है।

h अपने रिश्ते के प्रति ईमानदार हो।

h थोड़ी सी मुझे भी आजादी दे, ताकि मैं अपना मनपसंद काम भी कर सकूं।

h मेरे दोस्तों और परिचितों से सम्मानपूर्वक बात करें।

h खाना खाने से पहले मुझसे भी पूछे कि मैंने खाना खाया है या नहीं।

h अपने दायित्वों का सही तरीके से पालन करे।

h प्लीज, सॉरी, थैंक्स जैसे शब्दों का सही समय पर प्रयोग अवश्य करे।

h उसे अपने प्रेम को अभिव्यक्त करना आता हो।

h जीवनसाथी हसमुख, खुशमिजाज साथ ही रोमांटिक भी हो।

h मेरा जीवनसाथी ऐसा हो, जो मेरी इज्जत करे। साथ ही मेरे परिवार वालों की भी पूरी रेस्पेक्ट करे।

h मेरे जीवनसाथी को मेरी परवाह हो। वह मेरे प्रति लापरवाही न दिखाए।

h मेरी बात को भी ध्यान से सुने। ऐसा न हो कि केवल अपनी ही चलाता रहे।

h मुझसे कोई गलती हो जाने पर मुझे समझाए न कि सबके सामने खरी-खोटी सुनाना शुरू कर दे।

h जीवनसाथी सिर्फ अपनी कहने की ही नहीं, दूसरों की सुनने की भी क्षमता रखता हो।

h उसकी सोच खुली हो। वह संकीर्ण मानसिकता वाला न हो अर्थात किसी से बात करता देखकर आग बबूला न हो।

h अगर मैं कभी हंसी-मजाक करूं तो उसे मजाकस्वरूप ही लें। ऐसा न हो कि खुद तो चाहे जो कुछ कहता रहे, लेकिन मेरे मजाक करने पर लड़ पड़े।

हमारा स्वास्थ्य

मां के दूध के विविध उपयोग

रिपोर्टों के मुताबिक जहां एक ओर मां का दूध बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में सहायक होता है वहीं दूसरी ओर यह दूध उच्च आईक्यू स्कोर से भी जुड़ा है और यह मोटापे की दर को कम करता है। समय से पहले जन्म लेने वाले बच्चों में यह घातक संक्रमणों को तथा अन्य मेडिकल समस्याओं को रोकने में मदद करता है। यही कारण है कि डॉक्टर नवजात को पहले 6 महीने के लिए मां का दूध पिलाने की सलाह देते हैं। हालांकि बच्चे के लिए मां के दूध के लाभ हम सबको पता है परंतु हम में से अधिकतर यह नहीं जानते कि इसका उपयोग कई अन्य तरीकों से भी किया जा सकता है। आइए जानते हैं इस आश्चर्यजनक दूध के कुछ अन्य उपयोग।

। बच्चे को पोषण देने के साथ-साथ मां का दूध कई अन्य समस्याओं को सुलझाने में भी सक्षम है। उदाहरण के लिए इससे डाइपर का इलाज किया जा सकता है। जहां रैश हो उस भाग पर थोड़ा सा मां का दूध छिड़के और इसे सूखने दें। कुछ दिनों में भी रैश की समस्या कम हो जाएगी।

। दांतों की समस्याओं के लिए भी मां का दूध बहुत बढ़िया रहता है। आप इसे क्यूब्स में फ्रीज कर सकती हैं। फिर इसे एक स्टरलाइज्ड कपड़े में लपेट कर बच्चे को दे सकती हैं। फिर इसे एक स्टरलाइज्ड कपड़े में लपेट कर बच्चे को दे सकती हैं।

। बच्चों में कान के संक्रमण का इलाज करने के लिए मां के दूध की कुछ बूंदें उसके कान में डालें।

। चूंकि मां के दूध में एंटी सैप्टिक तथा एंटी बैक्टीरिया गुण होते हैं इसलिए इसका उपयोग खरोचों तथा संक्रमणों का उपचार करने के लिए किया जा सकता है। सनबर्न से पीड़ित त्वचा पर थोड़ा सा मां का दूध डालें तो परेशानी से थोड़ी राहत मिल सकती है। कीड़ों के काटने पर भी आराम के लिए आप इसका उपयोग कर सकती हैं। इसका प्रयोग जख्म को साफ करने के लिए भी किया जा सकता है।

। मां के दूध का उपयोग विभिन्न रैसीपियों में भी किया जा सकता है क्योंकि अध्ययनों से पता चला है कि इसमें ऐसे तत्व मौजूद होते हैं जिनमें विभिन्न प्रकार की कैंसर कोशिकाओं के विकास को रोकने की क्षमता होती है।

। कई अध्ययनों में यह कहा गया कि मां का दूध कैमिकल लुब्रीकेंट्स का एक प्राकृतिक विकल्प है क्योंकि कैमिकल लुब्रीकेंट्स से संवेदनशील त्वचा पर समस्याएं हो सकती हैं।

। मां के दूध तथा नारियल तेल के मिश्रण से कील-मुहांसे दूर किए जा सकते हैं। इसका उपयोग मेकअप हटाने के लिए तथा फटे होठों की समस्या को दूर करने के लिए किया जा सकता है। वास्तव में ब्रैस्ट मिल्क फेशियल एक ऐसी प्रक्रिया है जो पश्चिम में काफी लोकप्रिय है विशेषज्ञों के अनुसार इसमें मौजूद कैसीन नामक प्रोटीन कोशिकाओं को समृद्ध बनाता है और त्वचा को चमकदार बनाने में सहायता करता है।

साबूदाना वड़ा

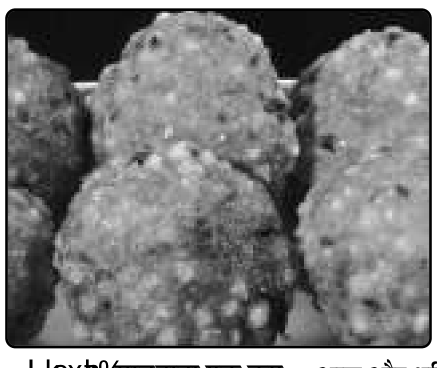

l kexh% साबूदाना एक कप, भुनी मूंगफली, 1/2 कप उबले हुए आलू, हरीमिर्च 2, हरा धनिया, 1/4 कप आधा कटा हुआ अदरक, नमक स्वादानुसार, तलने के लिए तेल।

fof/ % साबूदाने को धोकर दो घंटे के लिए भिगो दें, मूंगफली के छिलके उतार कर उसे कूट लें। अब साबूदाने से पानी निकालकर उसे धूप में सुखा लें। अब एक बर्तन में सूखा हुआ साबूदाना डालकर उसमें कूटी हुई मूंगफली, बारीक कटी हुई हरी मिर्च, अदरक, आलू और धनिया डालकर अच्छे से मैश कर लें। हथेली पर थोड़ा घी लगाकर मिश्रण के छोटे-छोटे गोले तैयार करें। गोलों को थोड़ा-सा हाथ से दबाकर वड़े का आकार दें और गर्म तेल में तलें। इसे इमली की चटनी के साथ सर्व करें।

दर्द के उपचार के लिए होम्योपैथिक बेहतर

दुनिया में दर्द का कोई इलाज नहीं है। फिर भी दवाखाने पर प्रतिदिन जो मरीज आते हैं वे चाहते हैं कि उन्हें ऐसी कोई होम्योपैथिक दवाई दी जाए जिससे उनका दर्द कम हो जाए। हम यदि दर्द के कारण का पता लगाकर उसका निवारण नहीं करेंगे तो दर्द से राहत मिलना मुश्किल है। दर्द एक आम समस्या है जिसका इलाज अक्सर इंसान ढूंढता है।

mnZ d s vke i d kj & पीठ का दर्द, सिर दर्द, पेट दर्द और जोड़ों का दर्द है जो कि ऑस्टियो आर्थराइटिस या गठिया, माइग्रेन या पेट की अन्य समस्या की वजह से हो सकता है। तेज दर्द आमतौर पर किसी मांसपेशियों के चोटिल होने, हड्डियों, जोड़ या किसी आंतरिक अंगों में चोट की वजह से हो सकता है। दर्द को कैटेगरी में भी बांटा जा सकता है। न्यूपैथिक और साइकॉजेनिक में बांटा जा कता है। पुराने दर्द में आमतौर पर होम्योपैथिक दवाइयों का प्रयोग करके कई तरह के गंभीर साइड इफेक्ट से बचा जा सकता है।

v kWLV; k s v kFkZjkbfVl % इसके उपचार का मुख्य उद्देश्य दर्द से आराम दिलाना और बीमारियों को नियंत्रिण करना। वैसे होम्योपैथिक उपचार ऑस्टियोआर्थराइटिस के लिए इफेक्टिव पारंपरिक उपचार है। ऑस्टियोआर्थराइटिस के इलाज के लिए कुछ होमियोपैथी दवाईयां जैसे रस-टाक्स, ब्रायोनिया, जेल्सिमियम, कास्टिकम, अर्निका, लेकेसिस, कैलकेरिया फॉस आदि अत्यंत प्रभावी है।

d kuk a d s nnZ d s fy, % होम्योपैथी दवाएं कानों में दर्द के लिए बहुत ही प्रभावी होती हैं। अगर आपके कान में दर्द है तो किसी होमियोपैथी चिकित्सा से सलाह लें। कान के दर्द में प्रभावी दवाएं पल्सेटिया, बेलाडोना, हीपर सल्फ, कॉलिम्यूर इत्यादि है।

xfB; k% गठिया के उपचार में प्रयोग होने वाली दवाएं एपिस मेल, अर्निक, ब्रायोनिया, कास्टिकम, पल्सेटिला, रस टॉक्स, रुटा आदि लक्षणानुसार दी जा सकती हैं।

fl j nnZ $ ekbxsu % होम्योपैथी दवाईयां जो सिरदर्द को ठीक करती है व माइग्रेन्स से पूर्ण रूप से निजता दिलाती है जैसे नेट्रमम्यूर, इग्निशिया, पल्सेटिला, ग्लोनाइन इत्यादि।

nka r nnZ % दांतों के इलाज के लिए भी होम्योपैथी दवाएं प्रभावी होती हैं जैसे कोपिया, मर्कसोल, केमोमिला, प्लेन्टेगो व स्टेफीसेग्रिया आदि।

ekp nnZ % चोट के बाद होने वाले दर्द के उपचार के लिए अन्रिका, ब्रायोनिया, रस टॉक्स, रुटा, होईपेरिकम जैसी होमियोपैथिक दवाओं का प्रयोग किया जाता है।

ब्यूटी टिप्स

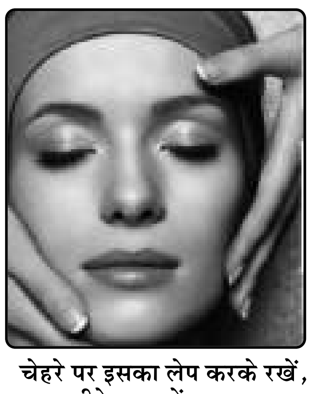

C मक्खन में थोड़ी सी केसर मिलाकर होठों पर लगाने से होंठ फटना बंद हो जाते हैं।

C लंबे समय तक पपीता खाने से चेहरे का सौंदर्य बढ़ता है। पपीते का गूदा चेहरे पर लगाने से त्वचा की कांति बढ़ती है।

C चाय की पत्ती को पानी में उबालकर उसमें बाल धोएं, बाल गिरना बंद हो जायेंगे, साथ ही उनमें चमक भी रहेगी।

C रात को पिसी मसूर की दाल को गुलाब जल में भिगोकर रख दें। सुबह नहाने से पहले 15 मिनट तक चेहरे पर इसका लेप करके रखें, एक महीने तक करें।

C केशों को झड़ने से बचाने के लिए दही के आंवले का सत्व तथा मुलतानी मिट्टी मिलाकर लगाना चाहिए।

पीलिया

खरबूजे के बीज की गिरी, खीरे के बीज की गिरी, कासनी, जड़ कासनी प्रत्येक 4 ग्राम, चीनी 20 ग्राम पानी में डालकर रगड़कर सुबह-शाम पीना उत्तम चिकित्सा है।

संध्या

संध्या समय सोना, पढ़ना और भोजन करना निषिद्ध है। सोने से पूर्व पैरों को ठंडे पानी से धोना चाहिए, किन्तु गीले पैर नहीं सोना चाहिए। इससे धन का क्षय होता है।

आंव

आंव की शिकायत हो, तो मट्ठा में सेंधा नमक व सौंठ पाउडर डालकर प्रतिदिन खाने से लाभ मिलने लगता है।

रोग से ग्रसित होने पर

सोते समय अपना सिरहाना पूर्व की ओर रखें।

अपने सोने के कमरे में एक कटोरी में सेंधा नमक के कुछ टुकड़े रखें। सेहत ठीक रहेगी।

दमा घरेलू उपचार

v नित्य प्रातःकाल 100 ग्राम पानी में 10 बूंद लहसुन रस एवं दो चम्मच शहद पियें।

v दोपहर में एक गिलास पानी में एक चम्मच नीबू रस, एक चम्मच शहद लें।

v सायंकाल तुलसीदल 5-7 पत्ते तथा गुड़ का काढ़ा बनाकर पियें।

v रात्रि में सुहागा का फूला तथा पिसी मुलैठी मिलाकर आधा चम्मच (डेढ़ ग्राम) थोड़े से शहद में मिलाकर चाटें।

इन्हें भी आजमाएं

b चेहरे के दाग-धब्बों के लिए डेढ़ बड़ा चम्मच बेसन, एक बड़ा चम्मच मलाई रहित दूध, नींबू की कुछ बूंदे और एक बड़ा गुलाब जल मिलाकर पेस्ट तैयार कर लें। इसकी पतली परत चेहरे पर लगाएं और आधे घंटे बाद पानी से धो लें। इसे हफ्ते में तीन-चार बार कुछ महीनों तक इस्तेमाल करें। दाग धीरे-धीरे हल्के पड़ने लगेंगे।

b नीम की छाल को पीसकर पाउडर बनाकर एक बोतल में रख लें। नहाने से पहले आधा चम्मच पाउडर को फेस वॉश के साथ मिलाकर हल्के हाथों से पांच मिनट तक चेहरे पर मसाज करें और फिर पानी से धो लें।

b चेहरे की गंदगी साफ करने के लिए कच्चे आलू के स्लाइस इस पर मलें। इससे आपके चेहरे को ठंडक पहुंचेगी। बाद में चेहरे को सादे पानी से धो दें।

b टमाटर को त्वचा के काले धब्बों एवं आंखों के नीचे बनने वाले काले घेरों पर लगाएं। इससे धब्बे व काले घेरे दूर होंगे। आप चाहें तो आलू का रस भी लगा सकती हैं।

b दूध में चुटकी भर नमकर मिलाकर रूई के फोहे से अपने चेहरे को साफ करें। चेहरे के दाग साफ हो जायेंगे।

b आटे के चोकर में थोड़ा-सा दूध, दही और कुछ बूंदे नींबू के रस की मिलाकर पेस्ट तैयार कर लें। हल्के हाथों से फेस पर लगाएं और सूखने पर धो दें। इससे चेहरे पर पड़े दाग-धब्बे तथा अन्य निशानों से निजात मिलेगी।

b होंठों का कालापन दूर करने के लिए शहद और नींबू का रस समान मात्रा में लेकर होंठों पर रोजना लगाएं। इसे 20 मिनट तक सूखने दें और फिर धो लें।

—हेमा शर्मा, चंडीगढ़

गैस... खट्टी डकारों के लिए क्या करें

V सबसे पहले अपने आहार में जरूरी परिवर्तन करें। कार्बोनेटेड पेय पदार्थ कम से कम लें। दालें, खासकर तुअर की दाल भी गैस का कारण बनती है। इसलिए इसका संतुलित सेवन करें। खाना खाने के बाद थोड़ी देर वज्रासन में बैठने से अपच या गैस की समस्या नहीं होती।

V वजन कम करें और नियमित व्यायाम का सहारा लें

V कोशिश करें कि प्रतिदिन नियत समय पर ही भोजन करें।

V सुबह और शाम को भोजन के बीच लंबा अंतराल न रखें, बल्कि बीच-बीच में कुछ न कुछ खाते रहें।

V बैक्टीरिया की पहचान हो जाने पर डॉक्टरी परामर्श से एंटीबायोटिक लें।

V संतुलित आहार लें। अति की स्थिति से बचें।

मखाने की खीर

l kexh% एक लीटर फुल क्रीम दूध, दो चम्मच देशी घी, 50 ग्राम मखाने, आधा कप चीनी, 4 छोटी इलायची, मेवे के लिए बादाम, किशमिश और काजू-पिस्ता तथा खोया 50 ग्राम।

fof/ : एक पैन में घी डालकर धीमी आंच पर गर्म कर उसमें मखाने भून लें। ठंडा होने पर उसे हाथ से दबाकर मसल लें। एक पतीले में दूध और मखाने डालकर आंच पर चढ़ा दें। एक उबाल आने पर आंच को धीमा कर दें और तब तक पकाते रहें जब तक दूध गाढ़ा न हो जाए, अच्छी तरह पक जाने पर चीनी, खोया, इलायची तथा मेवे डालकर थोड़ा और पकाएं ताकि चीनी अच्छी तरह घुल जाए। 10-15 मिनट पकाने के बाद आंच से उतारें। फिर ठंडा होने पर ड्राई फ्रूट से सजाकर सर्व कर सकते हैं।

चमत्कारिक हैं ये नुस्खे

i Fkjh% 25 ग्राम सहजन की जड़ की छाल को 250 ग्राम पानी में उबालें और छान लें। थोड़ा गर्म रहने पर पिलायें। कैसी भी पथरी क्यों न हो, कट-कटकर निकल जाती है।

v fr l kj (nLr) % जामुन के 25-30 कोमल पत्ते, 5 बताशों के साथ पीसकर उसका रस पिलाने से अतिसार तुरंत ठीक हो जाता है।

eq, es Nky s% सुबह जब भूख लगे तो 10 ग्राम गाय के घी की घूंट भर लो। इससे आंखों की रोशनी भी बढ़ेगी और छाले भी ठीक होंगे।

uha n % चैन की नींद न आती हो, तो सिरहाने की तरफ कपूर जलाकर ॐ का गुंजन करें। सुबह-शाम जलाने से वायु दोष दूर होगा, लक्ष्मी प्राप्ति होगी, बुरे सपने नहीं आयेंगे।

गुलाबजल बनाता त्वचा को चमकदार

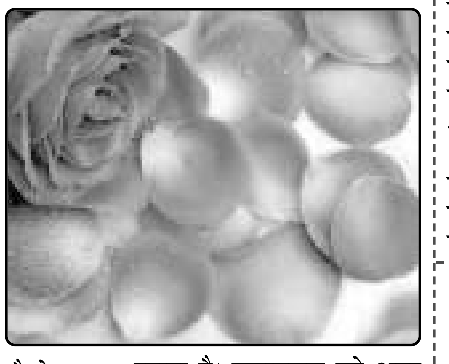

घरों में त्वचा को चमकदार और कोमल बनाने के लिए गुलाबजल का उपयोग नियमित तौर पर किया जाता है। गुलाबजल त्वचा को अंदर से नमी प्रदान करने में सहायक होता है। रोज ऑयल में एंटीफ्लेमेटरी प्रॉपर्टी होती है। इसके अलावा अगर आप रोजाना गुलाबजल का उपयोग करती है तो त्वचा में मौजूद लालिमा और रूखेपन को यह खत्म कर देता है।

यह एक बहुत अच्छा क्लींजर है, गुलाबजल चेहरे में मौजूद तेल और गंदगी को हटाकर, त्वचा के रोमछिद्रों को खोलने का काम करता है। जिस कारण एक्ने और मुंहासे नहीं होते, गुलाब की महक मूड को सही करने के लिए बहुत उपयोगी होती है। इसका अरोमा आपको अंदर से शांत और खुश बनाता है, जिस कारण आप रिलेक्स दिखाई देती हैं। अगर आपको तनाव मिटाना है तो इसका इस्तेमाल करें। यह नींद लाने में भी सहायक होता है और आपको फ्रेश रखता है। गुलाबजल को अगर आपको लगाना है तो इसे रात में लगातार सो जाएं।

गर्भावस्था के दौरान नाक से सांस का न आना

गर्भावस्था में हार्मोन्स अधिक होने के कारण नाक के साइनस की दीवारों पर सूजन आ जाती है। यह सूजन म्यूकस मैकब्रेन में होती है। इसके कारण सांस लेने में कठिनाई हो जाती है। यह परेशानी गर्भावस्था के समय पूर्ण समय तक देखी गई है, लेकिन बच्चे के जन्म के बाद यह शिकायत स्वयं ही दूर हो जाती है। इसके लिए लम्बी सांस का व्यायाम करना उचित होता है। ब्लड प्रेशर अधिक होने के कारण कभी-कभी स्त्री की नाक से रक्तस्राव होने लगता है परन्तु यदि ब्लडप्रेशर ठीक हो और फिर भी नाक से रक्त आये तो इसका प्रमुख कारण नाक का दब जाना या हार्मोन्स के कारण नाक की दीवारों का रक्तसंचार बढ़ जाना होता है।

दांतों पर ध्यान दें

चाहे भोजन करना हो या खिल-खिलाकर हंसना। आप इनमें अपने दांतों के प्रभाव को नजर अंदाज नहीं कर सकते। इसलिए दांतों की मजबूती, सफेदी और चमक को बरकरार रखना और जरूरी हो जाता है। आपके मसूड़े कमजोर हो और कभी-कभी दर्द करते हों तो उन्हें मजबूत बनाने के लिए सरसों के तेल में नमक मिलाकर उन पर रगड़े।

C मसूड़ों में सूजन या खून आने की परेशानी हो तो फिटकरी को सादे पानी में मिलाकर कुल्ला करें। दांतों में पीलापन हो तो उसे सफेद करने के लिए बेकिंग सोडा का इस्तेमाल कर सकते हैं। एक चम्मच बेकिंग सोड़ा में दो चम्मच पानी मिलाकर पेस्ट बना लें और इससे मंजन करें। ऐसा सप्ताह में दो बार करें।

C सेब का सिरका भी दांतों के लिए फायदेमंद है। दांतों की ताजगी के लिए नियमित रूप से सेब के सिरके से माउथवॉश करें।

C मसूड़ों में लाली हो तो मीठे सोडे से कुल्ला करें। लाली दूर हो जाएगी। दांतों पर धब्बे हो तो उन्हें सेब के सिरके से हटा सकते हैं। दो छोटे चम्मच सेब के सिरके में आधा छोटा चम्मच बेकिंग सोडा मिलाकर पेस्ट बनाएं। इस पेस्ट को दातों पर पड़े धब्बों पर रगड़े। ऐसा हफ्ते में एक-दो बार करें।

C दांतों को सफेद बनाने के लिए उन पर केले का छिलका रगड़े। जब दांत में दर्द हो तो दर्द वाले दांत के बीच लौंग दबा लें, थोड़ी देर में आराम मिल जाएगा।

C टूथपिक का इस्तेमाल न करें। इससे मसूड़ों को चोट पहुंचती है और दांतों के बीच में जगह ज्यादा हो जाती है। डेंटल फ्लस या इंटरडेंटल ब्रश का उपयोग करें।

—डॉ. पुनीत गुलाटी

कई रोगों की दवा अमृतधारा

cukus d h fof/ % कपूर, अजवायन सत्व और पिपरमेंट ये सभी जड़ीबूटी बेचने वाले अत्तार या विक्रेता के यहां आसानी से मिल जाएगी, इनको बराबर मात्रा में लीजिए। इनको एक शीशी में डालकर मिला लीजिए और उस शीशी को धूप में ढक्कन लागकर रख दीजिए। बीच-बीच में इस घोल को हिलाते रहिए। थोड़ी देर में ही पानी की तरह तरल हो जाएगी, अच्छी तरह ढक्कन लगाकर रखे अन्यथा उड़ जाएगी। यह घर के वैद्य की तरह ही सहायक है। निम्न तकलीफों में चमत्कारी असर मिलेगा। आजमाए बेहद सस्ता और प्रभावी चुटकुला।

V उल्टी जी मचलने पर बताशे या ग्लूकोज में एक बूंद डालकर खिलाये।

V इसकी चार से आठ बूंदे बताशे में या चीनी के शर्बत में मिलाकर दस्त के रोगी को दीजिए। इससे दस्त में आराम मिलेगा।

V दांत में दर्द होने पर रुई में भिगोकर दांत में दबा लें।

V पीली भोंरी, बिच्छू आदि कीड़ों के काटने पर उसी जगह मलें। काटे हुए स्थान पर अमृतधारा को रुई में भिगोकर लगाएं, तो तत्काल लाभ होता है।

शाकाहार से कैंसर का खतरा कम

वर्ल्ड कैंसर रिसर्च फंड द्वारा कराए गए एक शोध से पता चला है कि शाकाहारियों में प्रोस्टेट कैंसर होने की आशंका अन्य लोगों के मुकाबले 35 फीसदी कम होती है। कैलिफोर्निया की लोमा लिंडा युनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने विभिन्न किस्म के आहारों और कैंसर के बीच संभावित रिश्ते का विश्लेषण करने के बाद यह जानकारी दी। उन्होंने अध्ययन में शाकाहारी और मांसाहारी दोनों तरह के आहारों पर गौर किया था।

बी.पी. से बचना है तो...

P धूम्रपान से हमेशा दूर रहें।

P शराब या फिर किसी भी अन्य प्रकार के नशे का सेवन न करें।

P तली हुई चीजें, फास्टफूड (जंक फूड) व कोक आदि का सेवन न करें गुरेज।

P दिन में हरी सब्जियों व फलों का अधिक से अधिक सेवन करें।

P जीवन में कभी भी तनाव को अपने ऊपर हावी न होने दें।

सर्दी व खांसी से बचने के तरीके

आम दवाओं से करें परहेज-अपने बच्चे को सर्दी-जुकाम के लिए मिलने वाली आम दवाएं न दें दो वर्ष से कम उम्र के बच्चे को ऐसी दवाएं बिल्कुल नहीं देनी चाहिए। डॉक्टर भी ऐसा करने से मना करते हैं। इन दवाओं से बच्चों को आराम तो मिल सकता है, लेकिन इनके कई प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ सकते हैं। इससे बच्चों के दिल पर बुरा असर पड़ता है।

अपने बच्चे को अतिरिक्त तरल पदार्थ दें। अधिक तरल पदार्थों का सेवन निर्जलीकरण (डिहाइड्रेशन) से बचाता है। इसके साथ ही इससे नाक स्त्राव भी पतला हो जाता है। छह महीने या उससे अधिक आयु के बच्चों को सादा पानी व फलों का रस आदि दिया जा सकता है। छह महीने से कम उम्र के बच्चों के लिए मां का दूध ही सर्वोत्तम आहार है। गर्म तरल पदार्थ पिलाये-अपने छोटे बच्चे को तरल पदार्थ गरम करके दें। अगर आपका बच्चा छह महीने से अधिक आयु का है, तो आप उसे चिकन सूप, गर्म हर्बल टी दे सकते है। आप चाहें तो उसे सेब का रस भी गर्म करके पिला सकते हैं।

बेहद गुणकारी होता है आलू बुखारा

आलू बुखारा गर्मी के दिनों में आता है। आलू बुखारा दो प्रकार का होता है। एक तो बहुत मीठा और एक खट्टा मीठा होता है। इसकी तासीर ठंडी होती है। बवासीर के रोगियों के लिए यह काफी अच्छा है। उन्हें अधिक से अधिक मात्रा में आलू बुखारे का सेवन करना चाहिए। जिन लोगों को पेचिश का रोग हो उन्हें आलू बुखारे का जूस निकालकर दो-दो घंटे के पश्चात देने से पेचिश का रोग ठीक हो जाता है। आम कमजोरी के लिए-जिन लोगों के शरीर में खून कम हो उनके लिए आलू बुखारा बहुत लाभदायक है। उन्हें सुबह उठकर एक गिलास आलू बुखारा का जूस पीना चाहिए। इससे इनके शरीर में नया खून बनना शुरू हो जायेगा और नई शक्ति आयेगी।

t kM+ka nnZ % जोड़ों का दर्द ही गठिया रोग होता है। ऐसे रोगियों के लिए आलू बुखारे का जूस बहुत फायदेमंद होता है। उन्हें दिन में दो-तीन आलू बुखारे का जूस पीना चाहिए।

आजमाइए इन्हें भी

V दांत में दर्द हो तो अदरक का छोटा टुकड़ा लें, उसमें नमक लगाकर दांत के नीचे रख लें। यह सारा दर्द खींच लेता है।

V दांत की सफाई करने और बदबू दूर करने के लिए अमरूद की डाली का मंजन करें।

पालक और बादाम बढ़ाते हैं याददाश्त

शोधकर्ताओं ने अपने शोध में 140 लोगों को शामिल किया था और करीब आठ साल तक इनके मानसिक स्वास्थ्य व आहार पर शोध किया था। पालक, बादाम, मछली और सूरजमुखी के तेल जैसी डाइट के सेवन से याददाश्त से जुड़ी समस्याएं दूर होती हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि विटामिन ई की अधिकता वाली डाइट न सिर्फ याददाश्त, बल्कि दिल से जुड़ी बीमारियों को भी दूर करने में मददगार है। अगर आप डाइट में पालक और बादाम जैसी चीजें नहीं लेते हैं, तो अब लेना शुरू कर दें। हाल में हुए एक शोध में माना गया है कि पालक, बादाम, मछली, सूरजमुखी के तेल जैसी डाइट, जिनमें विटामिन ई भरपूर होता है, के सेवन से याददाश्त से जुड़ी समस्याएं दूर होती हैं।

यूनिवर्सिटी ऑफ ईस्टर्न फिनलैंड के शोध में माना गया है कि विटामिन ई को किसी भी फार्म में ले, यह दिमाग से जुड़ी समस्याएं दूर करने में मदद करता है। शोध के दौरान शोधकर्ताओं ने 140 लोगों पर किए गए अपने अध्ययन में माना कि विटामिन ई की अधिकता वाली डाइट जिसमें पालक, बादाम, मछली आदि शामिल हैं, के नियमित सेवन से प्रतिभागियों की याददाश्त में सुधार दिखा।

अनिद्रा एवं अधूरी नींद से मधुमेह

भरपूर और गहरी नींद सभी जीव-जन्तुओं के लिये जरूरी है जबकि अधिक सोना, अल्प निद्रा, अनिद्रा एवं अधूरी नींद से अनेक समस्याओं एवं बीमारियों को पनपने एवं बढ़ने का मौका मिलता है। ऐसी स्थिति में शारीरिक और मानसिक क्षमता में कमी आती है। इससे बीपी, शुगर हृदय रोग एवं पाचन के प्रभावित होने का खतरा बढ़ जाता है। अमेरिका के हावर्ड स्कूल ऑफ मेडिसिन ने अपने अध्ययन से यह पता लगाया है कि पांच घंटे से कम सोने एवं अधूरी नींद से डायबिटीज का खतरा बढ़ जाता है। ऐसी स्थिति में चयापचय क्रिया धीमी पड़ जाती है और वजन एवं मोटापा भी बढ़ जाता है। रात को देर से सोना एवं अधूरी नींद दोनों ही सेहत के लिए खतरनाक है। इससे शरीर की सभी क्रियाएं अव्यवस्थित हो जाती है।

महाशय धर्मपाल गुलाटी जी का निधन संपूर्ण समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति

6वें नेशनल स्पाइसेस एंड हर्ब्स सेमिनार एवं एग्जिबिशन के दौरान एनएनएस मीडिया ग्रुप द्वारा मसालों की दुनिया के शहंशाह महाशय धर्मपाल जी को लाइफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।

एमडीएच मसालों के मालिक महाशय धर्मपाल गुलाटी का गत 3 दिसंबर को सुबह हृदय गति रुक जाने के कारण निधन हो गया। उनके निधन से ना केवल भारतीय मसाला उद्योग में शोक व्याप्त हो गया बल्कि राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उनके निधन पर सभी स्तरों पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। ना केवल मसाला व्यवसाय से जुड़े दिग्गज उद्योगपतियों ने महाशय जी के निधन पर दुख जताया बल्कि राजनीति, समाज सेवा व लगभग प्रत्येक क्षेत्र के दिग्गजों ने महाशय धर्मपाल जी के निधन को एक अपूरणीय क्षति बताया, जिसका भरा जाना संभव नहीं है। यह महाशय जी का विराट व्यक्तित्व ही था कि उनके निधन से संपूर्ण देश में शोक की लहर दौड़ गई। निधन का समाचार प्राप्त होते ही लोगों में एक कोलाहल मच गया। उद्योग जगत से जुड़े लोग हों, मीडिया जगत से जुड़े लोग हों अथवा किसी भी अन्य क्षेत्र से जुड़े लोग हों, जो किसी भी प्रकार से महाशय धर्मपाल गुलाटी जी के संपर्क में रहे उन्हें तरह-तरह से याद कर श्रद्धांजलि देने में कतारबद्ध दिखे। महाशय धर्मपाल जी का व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा था कि हर आदमी उनके निधन पर उन्हें याद कर अपनी ओर से श्रद्धांजलि देने को आतुर था। इसी संदर्भ में हमने मसाला उद्योग से जुड़े अनेक दिग्गजों से उनके व्यक्तित्व के पहलुओं पर बात की। सभी ने एक स्वर से माना कि महाशय धर्मपाल गुलाटी भारतीय मसाला व्यवसाय के जनक थे। भारतीय मसाला व्यवसाय को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का सारा श्रेय महाशय जी को जाता है। इतनी ऊंचाइयों पर पहुंच जाने के बाद भी उनमें अहंकार लेश मात्र भी नहीं था। वह सभी से समान रूप से आदरपूर्वक, प्रेम पूर्वक मिलते थे। प्रस्तुत है कुछ दिग्गज उद्योगपतियों से हुई बातचीत के प्रमुख अंश-

नागौर में कसूरी मेथी का उत्पादन और व्यापार महाशय जी की ही देन है : सतीश गहलोत-मैनेजिंग डायरेक्ट सतीश मसाला

नागौर राजस्थान में सतीश मसाला के मैनेजिंग डायरेक्टर सतीश गहलोत ने एमडीएच के फाउंडर और सीईओ महाशय धर्मपाल जी को हार्दिक श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि तकरीबन 40 वर्ष पहले नागौर में कसूरी मेथी का श्रीगणेश करने का श्रेय महाशय जी को ही जाता है। उन्होंने बताया कि तकरीबन चार दशक पूर्व यहां के किसानों को कसूरी मेथी का बीज देकर उन्होंने कसूरी मेथी की खेती की उत्पादकता और क्वालिटी को बेहतरीन करके किसानों की आय/व्यवसाय को भी बढ़ाया, जिसका लाभ आज मिल रहा है। उन्हौंने बताया कि मेरे पिताजी श्री कानाराम जी नागौर के बहुत पुराने किसान थे और अपने पूरे खेतों में कसूरी मेथी की खेती महाशय जी के कहने पर शुरू किये थे। कानाराम जी और सतीश जी आज महाशय जी की प्रेरणा से सतीश मसाला ब्रांड बाजार में उतारकर मसाला कारोबार में परचम लहरा रहे हैं। काना जी के अनुसार महाशय जी का व्यवहार सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय वाला था।

सतीश गहलोत ने बताया कि एनएनएस मीडिया ग्रुप द्वारा दिल्ली में आयोजित मसाला सेमिनार में महाशय जी से काफी समय वार्तालाप हुआ था और उनकी प्रेरणा और थपकी भरे आशीर्वाद से ही उसके बाद व्यापार को नई दिशा देने में काफी सफलता मिली। सतीश मसाला परिवार महाशय जी के निधन पर गहरा दुख व्यक्त करता है, और सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

सच्चे कर्मयोगी थे महाशय धर्मपाल : चन्द्रमोहन आर्य

आर्य समाज मन्दिर, डीसीएम रेलवे कॉलोनी, दिल्ली के मंत्री चन्द्रमोहन आर्य ने महाशय जी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि पुरानी पीढ़ी के आर्य नेता, दानवीर, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य प्रधान महाशय धर्मपाल जी सच्चे कर्मयोगी थे जिन्होंने जो प्रण कर लिया वह पूरी जिम्मेदारी से निभाया।

> जीवन के अंतिम क्षणों तक महाशय धर्मपाल जी आर्य गुरुकुलों, संस्थाओं, विद्यालयों के संरक्षक बनकर दूसरों को प्रेरित करते रहे। कोरोना काल में सफाई कर्मचारियों का सम्मान तथा आर्य संस्थाओं में सक्रिय भागीदारी उसके ज्वलंत उदाहरण रहे।

लगभग 4 वर्ष पहले दिल्ली नगर निगम तथा दिल्ली सरकार ने हमारा आर्य समाज मंदिर ध्वस्त करके गिरा दिया था, लेकिन महाशय जी के प्रयासों से आर्यजनों ने सत्याग्रह किया। उनके कुशल नेतृत्व में आर्य समाज की विजय हुई। आर्य समाज डीसीएम रेलवे कॉलोनी दिल्ली का भव्य मंदिर निर्माण हुआ। आज वहां पिछड़े, निरक्षर लोगों को तन ढकने को कपडा, पढ़ाई हेतु पुस्तकें, खिलौने देकर सहयोग किया जाता है। वे स्वयं तो आर्य समाज के रचनात्मक कार्यों में अग्रणी रहते थे साथ ही पुत्र राजीव गुलाटी तथा पुत्रियों को भी इस मिशन में जुड़े रहने की प्रेरणा देते थे।

जीवन के अंतिम क्षणों तक महाशय धर्मपाल जी आर्य गुरुकुलों, संस्थाओं, विद्यालयों के संरक्षक बनकर दूसरों को प्रेरित करते रहे। कोरोना काल में सफाई कर्मचारियों का सम्मान तथा आर्य संस्थाओं में सक्रिय भागीदारी उसके ज्वलंत उदाहरण रहे। 3 दिसंबर को प्रात 3 बजे महाशय धर्मपाल जी की हृदयगति रुक जाने से निधन होने से आर्य समाज को गहरी चोट पहुंची है, इसे पूर्ण नहीं किया जा सकता।

बाजपेयी सरकार में एक्साइज ड्यूटी वापस करवाई : बाबू झालानी

महाशय धर्मपाल जी के व्यक्तित्व को याद करते हुए अलवर निवासी ब्रांडेड मसाला निर्माता बाबू झालानी ने बताया कि 1998 में जब केंद्र में अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार थी उस समय मसालों पर एक्साइज लगा दी गई थी और सारे मसाला व्यवसायियों के ऊपर संकट के बादल छा गए थे। ऐसे में महाशय धर्मपाल जी की अगुवाई में कीर्ति नगर स्थित उनकी फैक्ट्री में पूरे देश से प्रमुख मसाला निर्माताओं को आमंत्रित किया गया और तुरंत ऑल इंडिया स्पाइसेज मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन का गठन किया गया। मीटिंग में सर्वसम्मति से महाशय जी को अध्यक्ष चुना गया। मेरे सहित कुल10 लोगों को कार्यकारिणी में शामिल किया गया। सामूहिक प्रयास से सरकार को एक्साइज वापस लेनी पड़ी।

महाशय जी की थपकी मिलना बहुत बड़ा आशीर्वाद था : सारांश बंसल एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर-स्टार मसाला

मसाला ग्रुप के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर सारांश बंसल ने बताया कि महाशय धर्मपाल जी मसाला उद्योग के एक प्रकार से पितामह थे। उनकी एक थपकी से जो आशीर्वाद बरसता था उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है।उन्होंने व्यापार केसरी को बताया कि मेरे ताऊजी नरेश बंसल जी ने बताया कि करीब 20 वर्ष पूर्व दिल्ली के प्रगति मैदान में महाशय जी ने थपकी देकर आशीर्वाद दिया था, उसके बाद से ही उनका व्यापार लगातार तरक्की की ओर अग्रसर हुआ।

प्रगति मैदान में उस समय एम डी एच और हमारा स्टाल साथ साथ लगा हुआ था। उन्होंने कहा ऐसे मसाला उद्योग के किंग को दिल से हार्दिक श्रद्धांजलि जिनकी भरपाई होना असंभव है।

व्यवसाय में कभी किसी को प्रतिद्वंदी नहीं समझा और हमेशा सबकी मदद की : सुदीप गोयनका

शुभम गोल्डी मसाले के सुदीप गोयनका कहना है कि सही मायनों में मसाला उद्योग को अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाने वाले महाशय धर्मपाल जी ही थे। एक तरह से कहा जाए तो उन्हें मसाला उद्योग का जनक कहा जा सकता है। मसाला उद्योग में पैकेजिंग की शुरुआत महाशय धर्मपाल जी द्वारा ही की गई। मसाला उद्योग को इतना व्यापक बनाने का संपूर्ण श्रेय महाशय जी को ही जाता है। उन्होंने व्यवसाय में कभी किसी को अपना प्रतिद्वंदी नहीं समझा। उन्होंने हमेशा मसाला उद्योग के फलने-फूलने पर जोर दिया। सदैव सभी की मसाला व्यवसाय में मदद की। समय-समय पर जो जरूरी ज्ञान जिसको देने की आवश्यकता थी उसको निसंकोच वह ज्ञान दिया। उन्होंने सभी को अपने परिवार की तरह समझा। वह हमेशा कहा करते थे कि व्यापारिक परिवार और व्यक्तिगत परिवार दोनों को सदैव संगठित रखने की आवश्यकता है तभी हम जीवन में संपूर्ण उन्नति कर सकते हैं। महाशय जी को याद करते हुए श्री गोयनका ने कहा कि उनके द्वारा आशीर्वाद के रूप में दी जाने वाली पांच थपकी भुलाए नहीं भूलती है। वह अपने आप में एक संस्थान थे। उनका सदैव कहना था कि जीवन में नेक नियत रखते हुए सदैव अपने व्यवसाय को ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। इसी को जीवन मंत्र मानकर वह सदैव सभी की मदद के लिए प्रयासरत रहते थे। उन्होंने कभी किसी को अपना प्रतिद्वंदी नहीं समझा। सदैव सबको उन्नति करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने जीवन पर्यंत अपनी एनर्जी को बनाए रखा।

युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत थे महाशय धर्मपाल जी : सौरभ जैन

ओसवाल ग्रुप के सौरभ जैन का कहना है कि महाशय धर्मपाल जी युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत थे। उनके संपूर्ण जीवन से सीख लेकर युवा अपने जीवन में संपूर्ण उन्नति पा सकते हैं। श्री जैन ने महाशय धर्मपाल जी को याद करते हुए बताया कि मेरी कई बार महाशय जी से मुलाकात हुई। मैं इस उम्र में भी उनको इतना सक्रिय देखकर दंग रह जाता था। इस उम्र में भी उनकी स्मरण शक्ति काबिले तारीफ थी। महाशय जी का जीवन हम सभी को प्रेरणा देने वाला है। किस प्रकार जीवन में उन्नति की जाए वे इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं। जिस प्रकार महाशय धर्मपाल जी ने एक छोटे से व्यवसाय को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बुलंदियों तक पहुंचाया वह अपने आप में काबिले तारीफ है। बहुत कम लोग इतनी ऊंचाइयों तक पहुंच पाते हैं और उसके बाद भी लोगों के मददगार रहते हैं। महाशय जी ने सिखाया कि किस प्रकार विपरीत परिस्थितियों में भी मनुष्य अपनी हिम्मत के बल पर उन्नति के शिखर को पा सकता है।

भारतीय मसाला उद्योग को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने का श्रेय महाशय धर्मपाल जी को जाता है : अभिषेक गुप्ता

अशोक मसाले के अभिषेक गुप्ता का कहना है कि भारतीय मसाला उद्योग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का श्रेय महाशय धर्मपाल जी को जाता है। जिस प्रकार से उन्होंने बड़े परिश्रम से पारंपरिक मसालों को अंतरराष्ट्रीय स्तर के इंडियन ब्रांड में तब्दील किया वह अपने आप में काबिले तारीफ है। कठिन परिस्थितियों में शुरुआत कर व्यवसाय को इस स्थान तक लाना कि वह दूसरों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बन जाए अपने आप में एक जटिल कार्य है किंतु महाशय जी ने अपने व्यक्तित्व से ना केवल जटिल कार्य को कर दिखाया बल्कि दूसरों के मददगार के रूप में भी सदैव आगे रहे। महाशय जी का शांत स्वभाव, इस उम्र में भी इतना अधिक सक्रिय रहना लोगों को प्रेरणा देता है। एक प्रकार से कहा जाए तो महाशय धर्मपाल जी मसाला उद्योग के आईकन थे। उन्होंने सभी को एक रास्ता दिखाया कि किस प्रकार मसाला उद्योग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाई जा सकती है। उन्हीं से प्रेरणा लेकर अनेक लोगों ने मसाला उद्योग के शिखर को छुआ। महाशय जी सदैव सभी से आत्मीयता से मिलते थे। वह सभी के सुख-दुख में भागीदार रहते थे। इतनी व्यस्त दिनचर्या के बावजूद भी वह सभी प्रकार के समारोह आदि में अपनी मौजूदगी दर्ज कराते थे। यह भी उनकी महानता का एक लक्षण था।

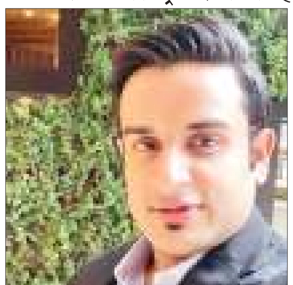

सभी को एक समान आदर-सत्कार देते थे महाशय धर्मपाल जी : चिराग पटेल

धर्मपाल गुलाटी जी को याद करते हुए रमन लाल मनीभाल, रामगंज मंडी, कोटा के चिराग पटेल ने कहा कि महाशय धर्मपाल गुलाटी मसाला उद्योग के जनक थे। उन्होंने ना केवल मसाला उद्योग को एक विशाल साम्राज्य में तब्दील किया बल्कि साथ ही भारतीय मसाला उद्योग की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक पहचान बनाई। जीवन में इतनी कामयाबी के बाद भी महाशय धर्मपाल गुलाटी जी किसी से किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं करते थे। वह सभी छोटे-बड़ों से प्रेम पूर्वक आदर व सम्मान से मिलते थे, सभी को पूरा आदर देते थे। उन्होंने कभी किसी से किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं किया, यही कारण था कि लोग उन्हें दिल से प्यार करते थे। महाशय जी का हंसमुख स्वभाव सभी को आकर्षित करता था। वह सभी लोगों से अत्यंत प्रेम पूर्वक मिलते थे। एक प्रकार से कहा जाए तो महाशय जी वर्तमान युग में हम सभी के लिए एक चलता-फिरता संस्थान थे जिनसे जीवन में बहुत कुछ सीखा जा सकता था। उनके पद चिन्हों पर चलकर जीवन में उन्नति के शिखर को छुआ जा सकता है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

महाशय जी का योगदान इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा : सुमित अग्रवाल

वाईपी स्पाइसेस के सुमित अग्रवाल का कहना है कि महाशय धर्मपाल गुलाटी मसाला उद्योग के पितामह थे। उन्होंने ना केवल मसाला व्यवसाय को एक नई दिशा दी बल्कि मसाला व्यवसाय की प्रकृति ही बदल कर रख दी है। सर्वप्रथम पैकेजिंग में मसाला बेचने की शुरुआत महाशय धर्मपाल गुलाटी द्वारा ही की गई थी। उन्होंने ना केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मसालों के व्यवसाय को इस कदर प्रचारित-प्रसारित किया कि भारतीय मसाले ना केवल देश में अपितु विदेशों में भी भारी मात्रा में पसंद किए जाने लगे। मसाला उद्योग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में महाशय धर्मपाल गुलाटी का योगदान इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा। महाशय जी के विषय में बात करते हुए सुमित अग्रवाल ने आगे कहा कि इस उम्र में भी जिस प्रकार से महाशय धर्मपाल गुलाटी जी सक्रिय थे वह हम सभी के लिए प्रेरणादायक है। इतने विशाल नेटवर्क का स्वामी होने के बावजूद भी महाशय धर्मपाल जी छोटी सी छोटी चीज को स्वयं देखते थे यह अपने आप में अत्यंत प्रेरणादायी है। एमडीएच के विज्ञापनों में महंगे कलाकारों अथवा मॉडलों के स्थान पर स्वयं उन्होंने विज्ञापन आदि किए। वर्तमान समय में बच्चा-बच्चा उन्हे इस कारण से पहचानने लगा। वह स्वयं अपने आप में अपने उत्पाद के एक उत्कृष्ट मॉडल बन कर उभरे। एक प्रकार से कहा जाए तो महाशय धर्मपाल गुलाटी जी का संपूर्ण जीवन ही सबके लिए प्रेरणादायक है। हम उस तरह की आदतों को अपनाकर ना सिर्फ अपना जीवन सफल बना सकते हैं बल्कि जीवन में चार चांद लगा सकते हैं।

इतनी बड़ी शख्सियत होने के बावजूद भी महाशय धर्मपाल जी अत्यंत जमीनी व्यक्ति थे : योगेश देसाई

तिरुपति एक्सपोर्ट्स के योगेश देसाई ने महाशय धर्मपाल गुलाटी जी को याद करते हुए कहा कि महाशय जी इतनी बड़ी शख्सियत होने के बावजूद भी अत्यंत जमीनी व्यक्ति थे, उनमें अहंकार लेश मात्र भी नहीं था। वह सभी से अत्यंत प्रेमपूर्वक मिलते थे। वह कभी किसी से किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं करते थे। यही कारण था कि वह जहां भी जाते थे उनके साथ फोटो खिंचवाने वालों की लाइन लग जाती थी। मसाले की उन्हें अत्यंत परख थी। मसालों के व्यवसाय में वे इस कदर पारंगत थे कि मसाले को हाथ पर रखकर उसकी गुणवत्ता मिनटों में बता देते थे। विश्वस्तरीय हस्ती होने के बावजूद भी वह लोगों से बहुत ही आत्मीयता से मिलते थे। उनका हंसमुख स्वभाव सभी को अपना कायल बना लेता था। महाशय जी का निधन हम सबके लिए एक भारी नुकसान है। उनका साया सर से उठ जाना संपूर्ण मसाला इंडस्ट्री का एक भारी नुकसान है, इसकी भरपाई होना मुश्किल है।

6वें नेशनल स्पाइसेस एंड हर्ब्स सेमिनार एवं एग्जिबिशन का दीप प्रज्वलित कर विधिवत शुभारंभ करते महाशय धर्मपाल जी।

महाशय धर्मपाल जी का स्वागत करते एनएनएस मीडिया ग्रुप के सीएमडी राजेश गुप्ता एवं डायरेक्टर अक्षय गुप्ता।

शून्य से शिखर के धनी भामाशाह थे महाशय धर्मपाल गुलाटी

कुछ लोग कर्म शील होते हैं तो कुछ धर्मशील। कोई विद्यावान होता है तो कोई गुणवान। कोई धनवान होता है तो कोई बलवान। कोई ज्ञानी होता है तो कोई दानी। किन्तु ये सभी गुण यदि कहीं एक साथ देखने को मिले तो वे थे महाशय धर्मपाल गुलाटी 'आर्य'। माघ कृष्ण तृतीया अर्थात् तीन दिसंबर के ब्रह्म मुहूर्त में प्रातः 5:38 बजे 98 वर्ष की आयु में शरीर त्यागने वाले महाशय श्री धर्मपाल आर्य जी का सम्पूर्ण जीवन जन-जन के लिए प्रेरणा दाई है। शून्य से शिखर तक का उनका जीवन चरित्र प्रत्येक बाल, युवा, वृद्ध, व्यवसायी, उद्यमी सभी के लिए एक नई ऊर्जा का संचार करता है। व्यावसायिक कुशलताओं के कारण ही गत वर्ष उन्हें महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा पद्मभूषण से सम्मानित भी किया गया था। देश भर में अनेक सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा संस्थाएं उन्हीं की प्रेरणा व सहयोग से चल रही हैं। वे वर्तमान में अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान थे।

27 मार्च, 1923 को सियालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) में जन्मे महाशय जी 1947 में देश विभाजन के बाद जब भारत आए, उनके पास मात्र 1,500 रुपये थे। सियालकोट में उनकी देगी मिर्च के नाम से दुकान थी तथा वे अपने पिता चुनी लाल के साथ ही व्यापार में हाथ बंटाते थे। लेकिन उनका वहां मन नहीं लगा और भारत-विभाजन के बाद वे दिल्ली आ गए। विस्थापन के बाद परिवार ने कुछ समय अमृतसर में एक शरणार्थी शिविर में बिताया। तत्पश्चात वे काम की तलाश में दिल्ली आ गए।

प्रारंभ में परिवार के भरण-पोषण के लिए उन्होंने दिल्ली के कनॉट प्लेस और करोल बाग के बीच तांगा चलाना शुरू किया। फिर उन्होंने तांगा बेचकर 1953 में चांदनी चौक में एक दुकान किराए पर ली। इस दुकान का नाम उन्होंने महाशियां दी हट्टी (MDH) रखा था। यहीं से प्रारंभ हुई इनकी मसालों के वैश्विक व्यापार की यात्रा। पहले उन्होंने चांदनी चौक के साथ-साथ दिल्ली के करोल बाग स्थित अजमल खां रोड पर भी मसाले की एक और दुकान खोली। 1959 तक दिल्ली के चांदनी चौक और करोल बाग में तीन दुकानो के बाद उन्होंने महाशियां दी हट्टी की निर्माण इकाई हेतु कीर्ति नगर में जमीन खरीदी। यहां से इनका व्यापार बढ़ने लगा।

उन्होंने कक्षा पांचवीं की पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी थी। श्री धर्मपाल आर्य व्यापार जगत के मंझे हुए खिलाडियों में से एक थे। कारोबार में बड़े-बड़े दिग्गजों ने भी उनका लोहा माना है। कहते हैं कि वे एफएमसीजी सेक्टर के सबसे ज्यादा कमाई वाले CEO थे। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक 2018 में उन्हें 25 करोड़ रुपये का वेतन मिला। अपनी कमाई का 90% भाग वे दान करते थे। दर्जनों आश्रम, अनाथालय, विद्यालय, चिकित्सालय, गुरुकुल व आर्य समाज मंदिर उनकी प्रेरणा या प्रत्यक्ष दान से चलते थे। वनवासीय, जनजातीय तथा गिरिवासी क्षेत्रों में सेवा, शिक्षा तथा विकास कार्यों को बलवती बनाने में उन्होंने बड़ा योगदान दिया।

उनके अपने परिश्रम से एक मसाले की दुकान से प्रारंभ हुआ उनका कारोबार धीरे-धीरे इतना फैला कि आज विश्व भर में उनकी मसाले की 18 फैक्ट्रियां हैं। एमडीएच अपने 62 उत्पादों के साथ आज उत्तरी भारत के लगभग 80 प्रतिशत बाजारों पर अपना प्रभुत्व जमा चुकी है। लंदन में कार्यालय के साथ आज 100 से ज्यादा देशों में एमडीएच मसालों की आपूर्ति होती है। वे उद्योग जगत के शायद ऐसे पहले व्यक्ति थे जो अपने उत्पादों का विज्ञापन खुद ही करते थे। "एमडीएच मसाला सच सच... एमडीएच एमडीएच" नामक विज्ञापन में उनका हंसमुख चेहरा दर्शकों के मानस पटल से कभी ओझल हो ही नहीं सकता। उन्हें विश्व का सबसे उम्रदराज 'ऐड स्टार' माना जाता है। वे आईआईएफएल हुरुन इंडिया रिच-2020 की सूची में शामिल भारत के सबसे बुजुर्ग धनी व्यक्ति थे। कभी मात्र 1500 रुपये वाले हट्टी की दौलत आज लगभग 5400 करोड़ रुपये तक पहुंच गई है। उनके वारे में कहा जाता है कि वे जैसे कमाते थे वैसे ही समाज कल्याण हेतु लुटाते भी थे।

वे नियमित रूप से प्रातः 4 बजे उठकर योग, ध्यान, भ्रमण, व्यायाम, प्राणायाम, यज्ञ, दान, स्वाध्याय व सत्संग करते थे। संयमित दिनचर्या, आहार-विहार, जीवन शैली व शुद्ध-सात्विक शाकाहारी भोजन के साथ शरीर को पर्याप्त आराम देने में भी उन्होंने कभी कोई कोताही नहीं बरती। किसी ना किसी एक कारखाने में वे नित्य जाते थे। कुछ दिनों पूर्व कोरोना पॉजिटिव तो हुए थे किन्तु उससे वे उबर भी गए थे। लेकिन बाद में उनकी तबीयत बिगड़ती चली गई। उनका इलाज दिल्ली के माता चानन देवी अस्पताल में चल रहा था।

शून्य से शीर्ष तक की तप-पूर्ण जीवन यात्रा करने वाले उदारमना महाशय धर्म पाल आर्य द्वारा शरीर छोड़ने के समाचार ने एक झटका तो दिया किन्तु उस दानवीर भामाशाह ने एक बात सदैव के लिए स्थापित कर दी कि

हम जन्मे जगत में, जग हंसा हम रोये।
ऐसी करनी कर चलें, हम हंसें, जग रोय॥

एनएनएस मीडिया ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर राजेश गुप्ता एवं डायरेक्टर अक्षय गुप्ता भी अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहते है कि "पद्मभूषण महाशय धर्मपाल आर्य ऐसे महान व्यक्तित्व थे जिन्होंने विस्थापन का दंश झेला, तांगे वाले से विश्व प्रसिद्ध मसाले वाले बने, दानवीरता में सबको पीछे छोड़ा, आर्य समाज व अन्य धार्मिक कार्यों के लिए समर्पित रह कर आजीवन शारीरिक व मानसिक रूप से सक्रिय रहे"।

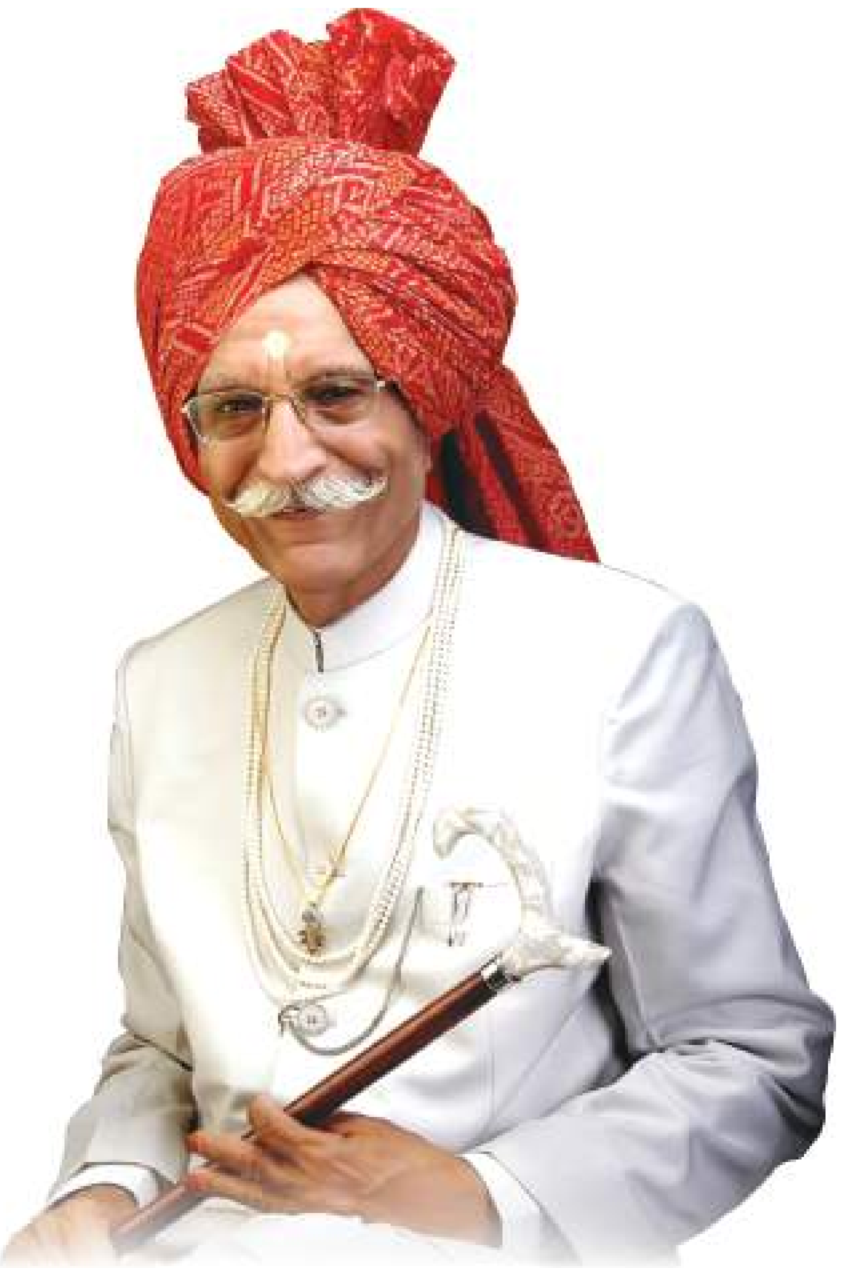

शत्-शत् नमन
पद्म भूषण महाशय धर्मपाल जी

NNS
Media Group Since 1950

एनएनएस मीडिया ग्रुप व मेरी दिल्ली परिवार की ओर से
भावभीनी श्रद्धांजलि

हिन्दी दैनिक मेरी दिल्ली

Date of Publication- : 06/12/2020
Posted at Delhi R.M.S. on- : 07/08/12/2020
Postal Regn. : DL (W) 05/2065/2018-2020 RNI No. 49326/89
Licence to Post Without Prepayment : U (W) - 08/2018-2020

परिणय सूत्र में बंधे

सोमना एवं आदित्य

मानव जीवन 16 पवित्र संस्कारों से बना है, इन्हीं संस्कारों में से सबसे महत्वपूर्ण संस्कार है विवाह संस्कार जिसके माध्यम से इंसान गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता है। 30 नवंबर को परम डेयरी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री राजीव कुमार एवं श्रीमती नमिता की सुपुत्री आयुष्मती सोमना ने श्री संजय गुप्ता एवं श्रीमती सोनिया गुप्ता के सुपुत्र चिरंजीव आदित्य के साथ अग्नि के समक्ष सात फेरे लगाकर जन्म जन्मांतर तक साथ निभाने के संकल्प के साथ शादी के पवित्र बंधन में बंध गईं। एक ओर जहां सोमना किसी अप्सरा से कम नहीं दिख रही थीं, तो वहीं आदित्य भी दूल्हे के सेहरे में सुहाने लग रहे थे। विवाह समारोह उमैद भवन पैलेस, जोधपुर में आयोजित हुआ जिसे इस शुभ अवसर पर भव्य रूप से सजाया गया था। शादी पूरे हिंदू रीति-रिवाज के अनुसार वैदिक मंत्रों के बीच संपन्न हुई। इस विवाह समारोह के तीन दिनों तक आयोजित विभिन्न रस्मों में शामिल होने के लिए मेहमानों को चार्टर्ड प्लेन से ले जाया गया।

इस अवसर पर मशहूर सिंगर जावेद अली, आकृति कक्कड़ एवं अन्य फिल्मी कलाकारों ने अपनी शानदार प्रस्तुति से आयोजन में समा बांध दिया। अभिनेता रजा मुराद, बिंदु दारा सिंह, असरानी, भाग्यश्री सहित तमाम नामचीन फिल्मी कलाकारों ने समारोह की भव्यता में चार चांद लगा दिये। राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्रा, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, दिल्ली के प्रिंसिपल कमिश्नर जयंत मिश्रा, पुलिस कमिश्नर सुनील गर्ग, गृहमंत्री अमित शाह के पीए सुधीर हलवासिया, बीकानेर वाला ग्रुप के अशोक अग्रवाल, हल्दीराम ग्रुप के मनोहर अग्रवाल, एनएनएस मीडिया ग्रुप के सीएमडी राजेश गुप्ता, एचएमसी ग्रुप के संदीप अग्रवाल, आनंदा डेयरी के राधे अग्रवाल के अलावा परिवारजन, लड़की के भाई रजत कुमार, सगे-संबंधियों सहित सामाजिक, धार्मिक, व्यापारिक एवं राजनैतिक क्षेत्र से जुड़ी तमाम नामचीन हस्तियों ने उपस्थित होकर नवयुगल को सफल एवं सुखद वैवाहिक जीवन का आशीर्वाद दिया।